अन्नोद्यम

राजभाषा हिंदी प्रसार पत्रिका
वर्ष 2025-26 "प्रथम अंक"

भारतीय खाद्य निगम
मण्डल कार्यालय, कोयम्बत्तूर

भारतीय खाद्य निगम, मंडल कार्यालय, कोयंबत्तूर को तमिलनाडु क्षेत्र में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन पर वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु "राजभाषा शिल्ड पुरस्कार" से सम्मानित करते हुए

'अन्नोद्यम'

राजभाषा हिंदी प्रसार पत्रिका
वर्ष 2025-26 प्रथम अंक

संरक्षक

आनंद वी
मंडल प्रबंधक

सह - संरक्षक

पी श्रीकला
प्रबंधक (राजभाषा)

अबिरामी पी
प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक

सुकिर्ति कुमारी
सहायक श्रेणी-III (राजभाषा)

भारतीय खाद्य निगम, मण्डल कार्यालय, कोयम्बत्तूर

(पत्रिका में प्रकाशन रचनाओं की मौलिकता का दायित्व स्वयं रचनाकारों का है।
रचनाओं की मौलिकता के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।
निःशुल्क तथा निजी वितरण हेतु प्रकाशित।)

वार्षिक कार्यक्रम 2025-26 ANNUAL PROGRAMME 2025-26

(राजभाषा नीति के कार्यान्वयन हेतु निर्धारित लक्ष्य /Targets for the Implementation of Official language Policy)

1. हिन्दी में मूल पत्राचार) ईमेल- सहित(Originating Correspondence in Hindi (including E-mails)					
क क्षेत्र		ख क्षेत्र		ग क्षेत्र	
क क्षेत्र से क क्षेत्र को From A region to A region	100%	ख क्षेत्र से क क्षेत्र को From B region to A region	90%	ग क्षेत्र से क क्षेत्र को From C region to A region	60%
क क्षेत्र से ख क्षेत्र को From A region to B region	100%	ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को From B region to B region	90%	ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को From C region to B region	60%
क क्षेत्र से ग क्षेत्र को From A region to C region	70%	ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को From B region to C region	60%	ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को From C region to C region	60%
क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति From Region A to Offices / individuals in States/UTs of A & B region	100%	ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य संघ राज्य क्षेत्र के / व्यक्ति / कार्यालय From Region B to Offices / individuals in States/UTs of A & B region	90%	ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य संघ / व्यक्ति / राज्य क्षेत्र के कार्यालय From Region C to Offices / individuals in States/UTs of A & B region	60%

	कार्य विवरण	क क्षेत्र	ख क्षेत्र	ग क्षेत्र
2.	हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में देना / Letters received in Hindi to be answered in Hindi	100%	100%	100%
3.	हिन्दी में टिप्पण / Noting in Hindi	80%	55%	35%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम (Training programme through Hindi Medium)	75%	65%	35%
5.	हिन्दी टंकक, आशुलिपिक की भर्ती / Recruitment of Hindi Typists, Stenographers	80%	70%	45%
6.	हिन्दी में डिक्टेशन स्वयं) की बोर्ड पर सीधे टंकण /अथवा सहायक द्वारा / (Dictation in Hindi / Direct typing on key-board (Self or by Asstt.)	70%	60%	35%
7.	हिन्दी प्रशिक्षण भाषा), टंकण, आशुलिपि / (Hindi Training ((Language, Typing, Stenography)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना /Preparing of Bilingual training Material	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर, पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजीटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ईपुस्तक-, सीडीडीवीडी/,पेन ड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर खर्च की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय / Expenditure for the purchase of Hindi books, including digital material i.e. Hindi e-books, CD/DVD, Pen drive & the amount incurred on Hindi translation from English & regional languages, excluding journals and standard reference books.	50%	50%	50%
10.	हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिसमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद /Purchase of all electronic equipments including computers in bilingual form	100%	100%	100%
11.	वेबसाईट/ Website	100% (द्विभाषी)		
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन / Citizen charter and display of Public interface information Board	100% (द्विभाषी)		
13.	(1) मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण / (% कार्यालयों का) Inspection of Offices located outside Headquarters (% of Offices)	30% (न्यूनतम)		
	(2) मुख्यालय / कार्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण/Inspection of sections at Hqrs./office	30% (न्यूनतम)		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें /Meetings regarding Official Language (क) हिंदी सलाहकार समिति/Hindi Salahakar Samiti (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति/Town Official Language Implementation Committee (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति /Official Language Implementation Committee	वर्ष में 02 बैठकें / 02 Meetings in a Year वर्ष में 02 बैठकें / 02 Meetings in a Year वर्ष में 04 बैठकें / 4 Meetings in a Year		
15.	कोड, मैनुअल, फार्म, प्रक्रिया साहित्य का हिन्दी अनुवाद / Translation of Codes, Manuals, Forms, Procedural Literature	100%		
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हो/Sections of the Ministries/Departments/Offices/Banks/Undertakings where entire work to be done in Hindi.	45%	35%	25%

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ सं
1.	संदेश	-----	5-11
2.	संपादकीय... अन्नोद्यम मेरे कमे क्षेत्र में एक नवीन आयाम	सुकिर्ति कुमारी	12
3.	कोयंबत्तूर का इतिहास	अबिरामी पी .	13-17
4.	नारी	निवेधा राजू वि एस	17
5.	पथ का अंत कभी नहीं होता	पी श्रीकला	18-19
6.	कृषि वस्तुओं में मूल्य अस्थिरता और भारतीय खाद्य निगम की स्थिरीकरण भूमिका	आनंद वी	20-21
7.	ग्रीन इंडिया बनाम डिजिटल इंडियाः क्या हो विकास का सही पैमाना?	एन. मगेश	22-23
8.	कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा के दौरान विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन और पुरस्कार वितरण की कुछ झलकियां..	-	24
9.	हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर हिंदी चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेते हुए अधिकारियों/कर्मचारियों के बच्चों की कुछ झलकियां ..	-	25
10.	दक्षिण भारत की ऐतिहासिक दृश्य पर एक नज़र	विथ्याशेनी बी आर के	26-29
11.	हिंदी की मिहमा	हरिप्रकाश वी	30
12.	भारत माता	बिंदुमोल टी	30
13.	भारतीय खाद्य निगम में उद्यमी अवसर	एन प्रवीण	31-33
14.	अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर उपलब्धि की कुछ झलकियाँ......सपनों को सच करती नारी...		34-35
15.	भारतीय खाद्य निगम के मजदूर	धना रुपा एम	36
16.	कार्यस्थल पर अनुशासन और ज़िम्मेदारी	के सेकर	37-38
17.	क्या आप जानते हैं?	आर मोहनप्रिया	38
18.	किसान की अद्भुत दास्तान	सरन्या एस	39
19.	मंडल कार्यालय कोयंबत्तूर में आयोजित रा.का.स. बैठक की की कुछ झलकियाँ....	-	40
20.	मंडल कार्यालय कोयंबत्तूर में आयोजित कार्यशाला बैठक की की कुछ झलकियाँ....	-	41
21.	जी आप यहाँ हैं :एस.पी.	सौम्या रसिका एस एस	42
22.	ये है मेरा वारिस जिसने मेरे बाल खींचे	आतीरा ए	42
23.	श्यामाचरण दुबे	ज. जन्नया	43
24.	लोकक्तियाँ / सूक्तियाँ	आर. मंगलेश्वरी	43
25.	भारतीय खाद्य निगम: राष्ट्र के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने वाला संगठन	मोहन राजा वी बी	44-45
26.	बैडिमंटन	आर कार्तिकियन	45
27.	राजभाषा हिंदी और संविधानिक भाषाओं के साथ सामंजस्य	सुकिर्ति कुमारी	46
28.	छिपे हुए रत्नों का अनावरण: एलेप्पी के पर्यटन, संस्कृति और भविष्य की कहानी	वैशाक जे	47-49
29.	कार्यालय में स्वछता पखवाड़ा के दौरान विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन और विजेता प्रतिभागिओं की कुछ झलकियाँ....	-	50
30.	मंडल कार्यालय, कोयंबत्तूर द्वारा सतर्कता हमारी साझा जिम्मेदारीकी कुछ झलकियाँ....	-	51
31.	मंडल कार्यालय, कोयंबत्तूर द्वारा क्रिसमस & नववर्ष कुछ झलकियाँ... & अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस की कुछ झलकियाँ....	-	52
32.	मंडल कार्यालय, कोयंबत्तूर द्वारा एफ एस डी पिलामेड्डू में महाप्रबंधक महोदय द्वारा शिशुगृह और क्रकेट नेट का उद्घाटन की कुछ झलकियाँ....	-	53
33.	एक बहादुर आदमी	अश्विनि एन	54
34.	मेरी ताकत	जेस्टिन राज	54
35.	पिता का साया	एलन जॉय	55
36.	बेरोजगारी का दर्द	बालाजी के वी	55
37.	व्यक्तित्व का मार्ग	एन आर हरि प्रसाद	56
38.	कोई युद्ध नहीं	एन आर हर्षित प्रसाद	56
39.	लेखा अनुभाग: अनुशासन की आधारशिला	एस श्रीनिवास राव	57
40.	मुझे FCI का कर्मचारी होने पर गर्व है, क्योंकि मैं इसकी अहमियत जानता हूँ।	एम. नागराजन	57
41.	अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की कुछ झलकियाँ..	-	58
42.	'एक पेड़ मां के नाम'..... अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा वृक्षारोपण..	-	59
43.	खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग के मंत्री महोदय द्वारा निरीक्षण की कुछ झलकियां..	-	60
44.	स्वतंत्रता दिवस की कुछ झलकियां..	-	61
45.	राजभाषा अनुभाग द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के विकास हेतु अनुभागों का निरीक्षण की कुछ झलकियां..	-	62
46.	पोंगल उत्सव और खेल महोत्सव की कुछ झलकियां..	-	62-63
47.	ओणम उत्सव की कुछ झलकियां...	-	64
48.	वित्तीय वर्ष (2024-25) में 10,000 से अधिक शब्दों की हिंदी नॉटिंग एवं ड्राफ्टिंग में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले कर्मचारी..	-	65
49.	कलाकृतियाँ	-	66-68
50.	अंतर-विभागीय क्रिकेट टूर्नामेंट में उपविजेता का गौरव क्षण...	-	69
51.	1 से 5 अगस्त, 2025 तक सलेम में आयोजित अखिल भारतीय अंतर क्षेत्रीय क्रिकेट टूर्नामेंट की कुछ शानदार और रोमांचक झलकियाँ	-	70-71

मुख्यालय के अधिकारी द्वारा राजभाषा निरीक्षण की कुछ झलकियां...

श्री रबिन्द्र कुमार अग्रवाल
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
मुख्यालय, नई दिल्ली

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि भारतीय खाद्य निगम, मंडल कार्यालय, कोयम्बत्तूर अपनी राजभाषा गृह पत्रिका **"अन्नोद्यम"** के प्रथम संस्करण का प्रकाशन करने जा रहा है। तमिलनाडु क्षेत्र में राजभाषा की प्रेरक गतिविधियों के माध्यम से, उल्लेखनीय कार्य किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी की गतिविधियों के गाध्यग से, कार्यालय के कार्मिकों में न केवल राजभाषा हिंदी को समझने की भावना उत्पन्न हुई है, बल्कि भाषा सीखने की जागरूकता भी पैदा हुई है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि मंडल कार्यालय, कोयम्बत्तूर अपनी गृह पत्रिका 'अन्नोद्यम' के प्रथम संस्करण के प्रकाशन से निश्चय ही कार्यालय में भाषा के प्रति अपने उत्तरदायित्वों के निर्वहन में सफल रहेगा।

मैं "अन्नोद्यम" के प्रथम संस्करण के प्रकाशन के लिए मंडल कार्यालय, कोयम्बत्तूर के रचनाकारों तथा संपादक मंडल को शुभकामनाएं देता हूं।

(रबिन्द्र कुमार अग्रवाल)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

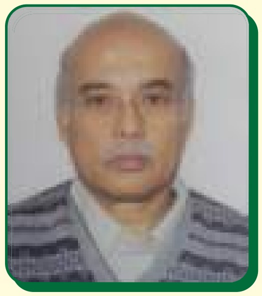

जयंत शर्मा
कार्यकारी निदेशक (राजभाषा)

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि भारतीय खाद्य निगम, मंडल कार्यालय, कोयंबत्तूर द्वारा राजभाषा गृह पत्रिका "अन्नोद्यम" के प्रथम संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है जो कि कार्यालय में हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक सशक्त और सराहनीय कदम है। राजभाषा कार्यान्वयन की दृष्टि से राजभाषा गृह पत्रिका कार्मिकों की लेखन क्षमता को बढ़ाने के साथ उन्हें अभिव्यक्ति प्रदान करने का एक सशक्त माध्यम बनती है।

मुझे विश्वास है कि यह गृह पत्रिका निगम के दक्षिण क्षेत्र में स्थित कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी की प्रगति के संवर्धन में सहायक सिद्ध होगी और पाठकों में हिंदी के प्रति रूचि जागृत करेगी।

पत्रिका के प्रथम अंक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएँ।

जयंत शर्मा

जयंत शर्मा
कार्यकारी निदेशक (राजभाषा)

जेसिंता लासरस
कार्यकारी निदेशक (दक्षिण)
आंचलिक कार्यालय, चेन्नै

संदेश

राजभाषा गृहपत्रिका **"अन्नोद्यम"** के प्रथम संस्करण के प्रकाशन हेतु भारतीय खाद्य निगम, मंडल कार्यालय, कोयम्बत्सूर के सभी कार्मिकों को बधाई। मंडल कार्यालय, कोयम्बत्तूर द्वारा पत्रिका के प्रकाशन का कार्य राजभाषा की प्रगति व प्रसार में उठाया गया प्रशंसनीय कदम है।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि 'अन्नोद्यम" गृह पत्रिका भारतीय खाद्य निगम में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी सृजनात्मक प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए एक उचित मंच प्रदान करेगी।

मैं **"अन्नोद्यम"** के प्रथम संस्करण के प्रकाशन से जुड़े संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को बधाई देते हुए, पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करती हूँ।

(जेसिंता लासरस, भा.प्र.से.)
कार्यकारी निदेशक (दक्षिण)

(हर्षित सिंह)
महाप्रबंधक (राजभाषा)
आंचलिक कार्यालय, चेन्नै

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि भारतीय खाद्य निगम, मंडल कार्यालय, कोयम्बतूर ने गृह पत्रिका "अन्नोद्यम" के प्रथम संस्करण का प्रकाशन करने का निर्णय लिया है। राजभाषा पत्रिका हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इससे कार्मिकों को अपनी साहित्यिक प्रतिभा व्यक्त करने का सुनहरा अवसर प्राप्त होता है। राजभाषा हिंदी की देख-रेख एवं इसके सम्पूर्ण कार्यान्वयन की जिम्मेदारी राजभाषा कार्मिकों की है, अतः सभी राजभाषा कार्मिकों से यह उम्मीद करता हूँ कि वे राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं विकास में अपनी महती भूमिका का निर्वहन करते रहे।

यह पत्रिका तमिलनाडु में हिंदी कार्यान्वयन को एक नया आयाम देगी। मुझे आशा है कि "अन्नोद्यम" के प्रकाशन से भारतीय खाद्य निगम, मंडल कार्यालय, कोयम्बत्तूर में राजभाषा हिंदी को एक नई दिशा मिलेगी।

"अन्नोद्यम" के प्रथम संस्करण के सफल प्रकाशन की शुभकामनाओं के साथ।

(हर्षित सिंह)
महाप्रबंधक (राजभाषा)

प. मुत्तुमारन
महाप्रबंधक (क्षेत्र)
भारतीय खाद्य निगम
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि भारतीय खाद्य निगम, मण्डल कार्यालय, कोयम्बत्तूर अपनी प्रवेशांक राजभाषा गृह पत्रिका "अन्नोद्यम" प्रकाशन करने जा रही है।

हिंदी भाषा में सभी भावों को अभिव्यक्त करने की अद्भुत क्षमता है, यही कारण है कि हिंदी को भारत की जननी भाषा कहा जाता है। यह महज भाषा नहीं बल्कि भारतीयों को एकता और अखंडता के सूत्र में पिरोती है। हिंदी को मन की भाषा भी कहा जाता है, जो कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी, संसद से लेकर सड़कों तक और साहित्य से लेकर सिनेमा तक हर जगह संवाद का सबसे बड़ा पुल बनकर सामने आती है।

संविधान में राजभाषा के रुप में प्रतिष्ठित हिंदी अब डिजिटल युग की प्रगतिशील भाषा बन चुकी है। सोशल मीडिया, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीनी अनुवाद, वाइस टाइपिंग और अनेक तकनीकी मंचों पर हिंदी ने प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज कराई है।

आज गूगल ट्रांस्लेट, इंडिक की बोर्ड, यूनिकोड आधारित टाइपिंग टूल्स, स्पीच टू टेक्स्ट तथा ऑनलाइन अनुवाद प्रणाली जैसे कई हिंदी टूल्स ने राजभाषा के क्षेत्र में कार्य को सहज, सुलभ और प्रभावी बनाया है। भारतीय खाद्य निगम तमिलनाडु क्षेत्र में भी हम इन तकनीकी संसाधनों के माध्यम से राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा दे रहें है।

मैं, "अन्नोद्यम" पत्रिका की संपादकीय टीम, समस्त रचनाकारों तथा सभी सहयोगियों को उनके समर्पण, परिश्रम के लिए हृदय से बधाई एवं शुभकामनाएं।

(प.मुत्तुमारन)
महाप्रबंधक (क्षेत्र)

अरुण कुमार
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि भारतीय खाद्य निगम, मण्डल कार्यालय, कोयम्बत्तूर अपनी राजभाषा गृह पत्रिका "अन्नोद्यम" का प्रवेशांक प्रकाशित करने जा रहा है।

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी पहचान, हमारी संस्कृति और हमारी विरासत का दर्पण है। भारत जैसे बहुभाषी देश में हिंदी वह सेतु है, जो विविधताओं को एकता के सूत्र में बांधती है। हिंदी का प्रयोग केवल संवैधानिक दायित्व नहीं बल्कि समावेशिता और संवाद की भावना को बढ़ावा देने वाला सशक्त माध्यम है। ऐसे में "अन्नोद्यम" पत्रिका का योगदान और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

यह पत्रिका हमारे कार्मिकों की सृजनात्मक क्षमताओं, भाषायी अभिरुचियों और सांस्कृतिक चेतना को उजागर करती है। हिंदी भाषा के संवर्द्धन एवं राजभाषा नीति के क्रियान्वयन में इस प्रकार का पहल अत्यंत सराहनीय है।

मैं, "अन्नोद्यम" पत्रिका की निरंतर प्रगति की कामना करता हूं एवं संपादक मण्डल, समर्पित रचनाओं एवं समस्त सहयोगियों को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए हार्दिक बधाई देता हूं।

अरुण

अरुण कुमार
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

आनंद वी

मंडल प्रबंधक,
भारतीय खाद्य निगम
कोयम्बत्तूर

संदेश

मेरे लिए यह अत्यंत गौरव एवं हर्ष का विषय है कि भारतीय खाद्य निगम,मंडल कार्यालय, कोयंबत्तूर द्वारा राजभाषा गृह पत्रिका "अन्नोद्यम" के प्रथम संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है जो कि हिंदी कार्यान्वयन के क्षेत्र में एक सराहनीय कदम है। राजभाषा कर्यान्वयन की दृष्टि से राजभाषा गृह पत्रिका कर्मचारियों एवं अधिकारियों में लेखन क्षमता को बढ़ाने का सशक्त माध्यम बनेगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी "अन्नोद्यम" तमिलनाडु क्षेत्र में पत्रिका के रूप में अपनी ख्याति राष्ट्र भर में विस्तारित कर अधिक महक फैलाएगी।

मुझे विश्वास है कि यह गृह पत्रिका निगम के दक्षिण क्षेत्र में राजभाषा प्रगति के संवर्धन एवं प्रगति में सहायक सिद्ध होगी एवं दक्षिण क्षेत्र में राजभाषा निगम के कार्य-कलापों को प्रतिबिंबित करने का उचित माध्यम बनने में सफल होगी।

मेरी शुभकामनाएं है कि "अन्नोद्यम" का प्रथम संस्करण पाठकों को सुज्ञान प्रदान करते हुए, राजभाषा के विभिन्न गतिविधियों को साथ में लेकर राजभाषा के प्रगामी प्रयोग में मील का पत्थर साबित हो।

आनंद

(आनंद वी)

सुकिर्ति कुमारी
सहायक श्रेणी-III (राजभाषा)

संपादकीय... "अन्नोद्यम" मेरे कर्मक्षेत्र में एक नवीन आयाम:----

भारतीय खाद्य निगम, मंडल कार्यालय, कोयंबत्तूर की ओर से "अन्नोद्यम" के प्रथम अंक को प्रस्तुत करते हुए बहुत खुशी हो रही है. इस विशेष उपलब्धि के लिए मंडल प्रबंधक महोदयके मार्गदर्शन एवं प्रबंधक राजभाषा, पी श्रीकला और अबिरामी पी महोदया के सहयोग के लिए धन्यवाद अर्पित करती हूं.

किसी भी संस्था की पहचान केवल उसके कार्यों से नहीं, बल्कि उसके विचारों और अभिव्यक्तियों से भी निर्मित होती है। "अन्नोद्यम" ऐसी ही एक सशक्त अभिव्यक्ति है, जो हमारे संगठन की रचनात्मकता, संवेदनशीलता एवं बौद्धिक समृद्धि का दर्पण है।

जब मुझे इस पत्रिका के संपादन का दायित्व सौंपा गया, तब यह मेरे लिए मात्र एक प्रशासनिक कार्य नहीं था, बल्कि यह एक नई जिम्मेदारी के साथ-साथ मेरे कर्मक्षेत्र में एक नवीन आयाम का प्रारंभ था। इस दायित्व ने मुझे न केवल अपने विचारों को परिष्कृत करने का अवसर दिया, बल्कि सहकर्मियों की प्रतिभाओं को पहचानने और उन्हें एक सशक्त मंच प्रदान करने का भी सौभाग्य दिया।

"अन्नोद्यम" के प्रथम अंक के साथ यह अनुभव और भी समृद्ध होता गया कि यह पत्रिका केवल लेखों का संकलन नहीं, बल्कि यह हमारे सामूहिक प्रयासों, रचनात्मक ऊर्जा और राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का जीवंत प्रमाण है। यह मंच हमें न केवल अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता देता है, बल्कि हमें एक-दूसरे के विचारों से जुड़ने और सीखने का अवसर भी प्रदान करता है।

संपादन की इस यात्रा में अनेक चुनौतियाँ भी आईं—समयबद्धता, विषय चयन, गुणवत्ता बनाए रखना—किन्तु प्रत्येक चुनौती ने मुझे कुछ नया सिखाया और मेरे अनुभव को और अधिक सशक्त बनाया। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि "अन्नोद्यम" ने मेरे भीतर निहित सृजनात्मकता को एक नई दिशा प्रदान की है।

मैं इस अवसर पर सभी लेखकों, सहयोगियों एवं योगदानकर्ताओं के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके सतत सहयोग एवं समर्पण से यह पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। साथ ही मुख्यालय, आंचलिक कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालय के सहयोग हेतु मैं हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

आशा है कि "अन्नोद्यम" भविष्य में भी इसी प्रकार नवीन विचारों, प्रेरणादायक लेखों एवं रचनात्मक अभिव्यक्तियों के माध्यम से हम सभी को समृद्ध करती रहेगी और हमारे कर्मक्षेत्र में नई ऊँचाइयों को स्पर्श करेगी।

आप सभी को "अन्नोद्यम" पत्रिका के प्रथम अंक की अनंत शुभकामनायें।

"विचारों की ज्योति से ही सृजन का पथ प्रकाशित होता है।"

सुकिर्ति कुमारी

(सुकिर्ति कुमारी)

अबिरामी. पी
प्रबंधक (गुण नियंत्रण / राजभाषा)

कोयंबत्तूर का इतिहास

यह एक उत्कृष्ट क्षेत्र है, जो सदैव अपने प्रचुर औद्योगिकीकरण पर गर्व करता है, तथा कभी संगम चेरा राजवंश द्वारा शासित था।यह अब कपड़ा, औद्योगिक, वाणिज्यिक, शैक्षिक, सूचना प्रौद्योगिकी और स्वास्थ्य सेवा क्षेत्रों में सबसे अधिक प्रगति करने वाले जिलों में से एक बन गया है। कोयंबत्तूर को गर्व से तमिलनाडु का विनिर्माण केंद्र कहा जाता है। दक्षिणी मैनचेस्टर "कोंगु नाडु "पालक्काड के पूर्वी प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता था।

ऐतिहासिक विवरण बताते हैं कि कोयम्बत्तूर शहर का निर्माण 9वीं शताब्दी के दौरान सुंदरमूर्ति नयनार और चेरन पेरुमल द्वारा किया गया था।

मरुदामलाई एक लोकप्रिय 12वीं शताब्दी का पहाड़ी मंदिर है जिसे तमिल राजाओं ने संगम काल के दौरान बनवाया था जैसा कि पुराणनुरु में दिखाया गया है और यह तमिल भगवान मुरुगन को समर्पित है। इसे भगवान मुरुगन का सातवां घर माना जाता है।

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने कोयंबत्तूर पर कब्ज़ा कर लिया। जनरल विलियम मीडोज के नेतृत्व में कंपनी ने कोयंबटूर (जिसे टीपू ने खाली कर दिया था) और कोयम्बत्तूर जिले के एक महत्वपूर्ण हिस्से पर नियंत्रण कर लिया।

वर्ष 1866 के दौरान: कोयम्बत्तूर नगर पालिका की स्थापना 1865 के नगर सुधार अधिनियम के अनुसार 1866 में की गई थी और प्रसिद्ध उद्योगपति रॉबर्ट स्टेन्स इसके पहले अध्यक्ष बने थे।1877: ए.टी. थिरुवेंगदास्वामी मुदलियार की याद में टाउन हॉल में क्लॉक टॉवर स्थापित किया गया। 1877 में ही क्लॉक टॉवर रूम के नीचे एक अस्पताल की योजना बनाई गई और उसे क्रियान्वित किया गया।

1892: नगर पालिका और नागरिकों के योगदान से शहर में विक्टोरिया टाउन हॉल का निर्माण किया गया।

1912 के दौरान: मद्रास प्रेसीडेंसी के कृषि विभाग द्वारा गन्ना प्रजनन संस्थान की स्थापना की गई। वनस्पतिशास्त्री डॉ. चार्ल्स अल्फ्रेड बार्बर इस संस्थान के पहले प्रमुख और सरकारी गन्ना विशेषज्ञ थे।

1921: सी.एस. रथिनासबपति मुदलियार 1921 से 14 वर्षों के लिए कोयम्बत्तूर नगरपालिका के अध्यक्ष बने। आर.एस.पुरम का नाम भी उनके नाम पर रखा गया है।)

1934: नगर पालिका ने अपनी पहली महिला अध्यक्ष के. थंकम्मा जैकब को चुना।

1981: कोयंबत्तूर को 1981 में नगर निगम में अपग्रेड किया गया, जो तमिलनाडु का तीसरा नगर निगम था।

कोयंबत्तूर की अर्थव्यवस्था

कोयंबत्तूर का प्रूडेंस सूचना प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और कपड़ा उद्योगों से काफी प्रभावित है।कोयम्बटूर को इसके व्यापक कपड़ा उद्योग के कारण ‘दक्षिण भारत का मैनचेस्टर’ कहा जाता है, जिसे आसपास के कपास के खेतों से ऊर्जा मिलती है।

कपड़ा

कोयंबत्तूर में बड़ी संख्या में लघु एवं मध्यम कपड़ा मिलें हैं।इसमें केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान (CICR) - दक्षिणी क्षेत्रीय स्टेशन और सरदार वल्लभभाई पटेल अंतर्राष्ट्रीय वस्त्र एवं प्रबंधन विद्यालय जैसे केन्द्रीय वस्त्र अनुसंधान संस्थान भी हैं।दक्षिण भारतीय वस्त्र अनुसंधान

संघ (SITRA) भी कोयंबत्तूर में स्थित है।

शहर में भारत सरकार द्वारा प्रस्तावित तकनीकी वस्त्रों के लिए दो उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) भी स्थित हैं, अर्थात् मेडिटेक, जो कि SITRA में स्थित एक चिकित्सा वस्त्र अनुसंधान केंद्र है, और इंडुटेक, जो कि PSG कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी में स्थित है।

सूचना प्रौद्योगिकी

यह शहर तमिलनाडु में चेन्नई के बाद दूसरा सबसे बड़ा सॉफ्टवेयर उत्पादक है।शहर में आईटी और बीपीओ उद्योग ने टाइडेल पार्क और शहर में तथा इसके आसपास अन्य नियोजित आईटी पार्कों के शुभारंभ के साथ भारी वृद्धि देखी है।वैश्विक आउटसोर्सिंग शहरों में यह 17वें स्थान पर है। टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, कॉग्निजेंट टेक्नोलॉजी सॉल्यूशंस, आईबीएम, रॉबर्ट बॉश जीएमबीएच, कैमरून इंटरनेशनल कॉरपोरेशन, टाटा एलेक्सी, डेल, अदिति टेक्नोलॉजीज, सीएसएस कॉर्प और केजीआईएसएल जैसी कंपनियों ने इस स्मार्ट सिटी में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है।

उत्पादन

कोयंबत्तूर में एक व्यापक और विविधतापूर्ण विनिर्माण क्षेत्र है, जिसे तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, दक्षिण भारत वस्त्र अनुसंधान संघ (एसआईटीआरए) जैसे अनुसंधान संस्थानों और बड़ी संख्या में इंजीनियरिंग कॉलेजों की उपस्थिति से सुविधा मिलती है, जो प्रतिवर्ष लगभग 50,000 इंजीनियर तैयार करते हैं।कोयंबटूर के कुछ प्रमुख उद्योगों में एलएंडटी, बॉश, पीएसजी, शक्ति समूह, लक्ष्मी मशीन वर्क्स (एलएमडब्ल्यू), प्रीमियर इंस्ट्रूमेंट्स एंड कंट्रोल लिमिटेड (पीआरआईसीओएल), प्रीमियर इवोल्विक्स, जैनेटिक्स, एलजीबी, रेवती इक्विपमेंट लिमिटेड, ईएलजीआई इक्विपमेंट्स, क्राफ्ट्समैन ऑटोमेशन प्राइवेट लिमिटेड, शांति गियर्स, रूट्स इंडस्ट्रीज शामिल हैं।

ऑटो घटक

कोयंबत्तूर ऑटो कम्पोनेंट उद्योग के लिए सबसे भरोसेमंद आउटसोर्सिंग स्थलों में से एक के रूप में उभरा है।इसवृद्धि में कई कारकों का योगदान रहा है, जिसमें संसाधनों की तत्काल उपलब्धता और कुशल तकनीकी प्रतिभा शामिल है। कई ऑटो कंपोनेंट निर्माण कंपनियां बहुराष्ट्रीय ब्रांडों के लिए OE भागीदार हैं। कोयंबत्तूर में ऑटो कम्पोनेंट बनाने वाली कुछ कम्पनियों में रॉबर्ट बॉश जीएमबीएच, प्रिकोल, क्राफ्ट्समैन ऑटोमेशन और रूट्स इंडस्ट्रीज शामिल हैं।

गीले ग्राइंडर और पंप विनिर्माण

कोयंबत्तूर में 700 से अधिक वेट ग्राइंडर निर्माता हैं। "कोयंबत्तूर वेट ग्राइंडर" शब्द को 2005-06 के बाद निर्मित वेट ग्राइंडरों के लिए भौगोलिक संकेत दिया गया।वेट ग्राइंडर विनिर्माण उद्योग 20,000 से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार प्रदान करता है और 50,000 लोग अप्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित होते हैं।इसे "एशिया का पंप शहर" भी कहा जाता है। इस शहर में बड़ी संख्या में लघु इंजीनियरिंग कंपनियाँ हैं।मोटर और पंप उद्योग भारत की दो तिहाई आवश्यकताओं की आपूर्ति करता है, जबकि इसके वेट-ग्राइंडर उद्योग का लगभग एकाधिकार है।

प्रमुख पंप उद्योग शार्प इंडस्ट्रीज, CRI पंप्स, टेक्समो इंडस्ट्रीज, डेक्कन पंप्स और केएसबी पंप्स अपने गुणात्मक उत्पादन के कारण दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं।

शिक्षा संस्थान

कोयंबत्तूर इस क्षेत्र का एक शैक्षणिक केंद्र है। कोयंबत्तूर क्षेत्र में 7 विश्वविद्यालय, 54 इंजीनियरिंग कॉलेज, 35 मेडिकल कॉलेज, 24 पॉलिटेक्निक कॉलेज और 70 से अधिक कला और विज्ञान कॉलेज, 20 से अधिक शोध संस्थान और 100 से अधिक सीबीएसई स्कूल हैं।शहर में तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय (स्था.1971), भारथिअर विश्वविद्यालय (1982), अन्ना विश्वविद्यालय कोयंबत्तूर (2007) जैसे प्रतिष्ठित राज्य के स्वामित्व वाले विश्वविद्यालय और अविनाशी लिंगम विश्वविद्यालय (1987), अमृता विश्वविद्यालय (2003), करुण्य विश्वविद्यालय (2004) और कर्पगम विश्वविद्यालय (2005) जैसे निजी विश्वविद्यालय हैं।

स्वास्थ्य देखभाल

कोयंबत्तूर और उसके आसपास करीब 750 अस्पताल हैं, जिनकी क्षमता 5000 बेड की है। हमारा कोयंबत्तूर नगर निगम भी 20 शहरी स्वास्थ्य चौकियाँ (UHP) चला रहा है और वे लोगों को निःशुल्क सेवाएँ प्रदान करते हैं, जो कि स्वागत योग्य है। 5 AIDS नियंत्रण केंद्र भी काम कर रहे हैं। डिस्पेंसरियों की बात करें तो 11 एलोपैथिक, 3 आयुर्वेदिक और 2 सिद्ध डिस्पेंसरियाँ हैं, जो आम लोगों की सेवा करने में गर्व महसूस करती हैं।

शहर में पहला स्वास्थ्य देखभाल केंद्र 1909 में शुरू किया गया था। 1969 में इसे कोयंबत्तूर मेडिकल कॉलेज अस्पताल (सीएमसीएच) में अपग्रेड किया गया।

शहर में कई बड़े बहु-सुविधा वाले निजी अस्पताल भी हैं जैसे पीएसजी अस्पताल, कोवई मेडिकल सेंटर और अस्पताल (केएमसीएच), केजी अस्पताल, कोयंबटूर किडनी सेंटर, जी. कुप्पुस्वामी नायडू मेमोरियल अस्पताल, श्री रामकृष्ण अस्पताल, शीला अस्पताल, कोंगुनाड अस्पताल, जेम अस्पताल, गंगा अस्पताल, अरविंद नेत्र अस्पताल, शंकर नेत्रालय, लोटस नेत्र अस्पताल, अश्विन अस्पताल, विक्रम ईएनटी अस्पताल, कोयंबटूर कैंसर फाउंडेशन, जी.पी. अस्पताल आदि।

नारी

निवेधा राजू वि एस
प्रबंधक (अगार)

प्रकृति की सबसे बड़ी शक्ति!

जो जीवन को धारण करती है – वह पृथ्वी है;

जो धन्य जीवन का पोषण करती है – वह जल है;

प्रकाश या झुलसाने वाली ज्वाला – वह अग्नि है;

मानसिक शक्ति, उसकीअदृश्य शक्ति – वह वायु है;

संसार की सबसे बड़ी रचना – वह आकाशऔरअंतरिक्ष है!

पाँचों ऊर्जाएँ उसके भीतर समाहित हैं;

वह सभी विद्यमान चीज़ों की शुरुआत है!

पथ का अंत कभी नहीं होता

मनुष्य के जीवन की सबसे बड़ी विशेषता उसकी अनवरत यात्रा है। यह यात्रा भौतिक भी हो सकती है और मानसिक भी, व्यक्तिगत भी हो सकती है और सामाजिक भी। लेकिन किसी भी स्तर पर इसे पूर्ण विराम नहीं दिया जा सकता। "पथ का अंत कभी नहीं होता" केवल एक दार्शनिक कथन नहीं है, बल्कि यह जीवन के सतत प्रवाह, संघर्ष और निरंतरता का प्रतीक भी है। इस आलोचना में हम इस विचार को साहित्यिक और सामाजिक दृष्टिकोण से विस्तारपूर्वक समझने का प्रयास करेंगे।

नाम : पी श्रीकला
पदनाम: प्रबंधक (राजभाषा)

साहित्यिक दृष्टिकोण

साहित्य में "पथ का अंत कभी नहीं होता" की अवधारणा एक प्रमुख विषय रही है। अनेक कवि, लेखक और दार्शनिक इस विषय पर अपने विचार प्रकट कर चुके हैं।

1. हिंदी साहित्य में यात्रा और सतत संघर्ष

(क) प्रेमचंद की रचनाएँ:

मुंशी प्रेमचंद की कहानियों और उपन्यासों में जीवन को एक संघर्षमयी यात्रा के रूप में देखा गया है। "गोदान" के नायक होरी और "गबन" के नायक रमेश, दोनों ही अपने-अपने जीवन संघर्षों से जूझते हुए आगे बढ़ते हैं। उनके लिए ठहराव का कोई विकल्प नहीं है। परिस्थितियाँ चाहे कितनी ही प्रतिकूल क्यों न हों, वे प्रयासरत रहते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि पथ का अंत कभी नहीं होता।

(ख) मैथिलीशरण गुप्त और निराला की कविताएँ:

मैथिलीशरण गुप्त की कविता "पथिक" हो या सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की "वह तोड़ती पत्थर"—दोनों में जीवन की निरंतरता और संघर्ष का चित्रण मिलता है। निराला की पत्थर तोड़ती महिला समाज की उस जिजीविषा का प्रतीक है जो कभी हार नहीं मानती।

2. पश्चिमी साहित्य में यह अवधारणा

पश्चिमी साहित्य में भी "पथ का अंत कभी नहीं होता" का विचार प्रमुखता से देखा जाता है।

होमर का "ओडिसी" एक ऐसा महाकाव्य है, जो इस विचार को पूरी तरह से चरितार्थ करता है।

- डांटे की "डिवाइन कॉमेडी" में भी आत्मा की यात्रा निरंतर चलती रहती है।

- अल्बर्ट कैमू की "द मिथ ऑफ सिसिफस" में यह तर्क दिया गया है कि मनुष्य का जीवन एक अंतहीन संघर्ष है।

सामाजिक दृष्टिकोण

समाज भी निरंतर विकास की यात्रा में रहता है। सभ्यताओं का उत्थान और पतन होता रहता है, लेकिन समाज की यात्रा कभी समाप्त नहीं होती।

1. भारतीय समाज और निरंतरता

भारत की सामाजिक संरचना को देखें तो हम पाते हैं कि यहाँ सामाजिक परिवर्तन निरंतर चलता रहता है। जातिवाद और सामाजिक सुधार: भारतीय समाज में जातिगत भेदभाव एक बड़ी समस्या रही है, लेकिन सुधारकों ने लगातार प्रयास कर इसे कम करने की कोशिश की है। राजा राममोहन राय, ज्योतिबा फुले, बाबा साहेब अंबेडकर जैसे समाज सुधारकों ने इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया।

2. वैश्विक सामाजिक परिवर्तन

औद्योगिक क्रांति से तकनीकी क्रांति तक: समाज का विकास लगातार हो रहा है। औद्योगिक क्रांति ने उत्पादन और रोजगार के नए अवसर दिए, और अब डिजिटल युग में हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और डेटा विज्ञान की ओर बढ़ रहे हैं।

लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास: विश्वभर में लोकतंत्र और मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी है।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य और निष्कर्ष

आज के समय में "पथ का अंत कभी नहीं होता" का विचार पहले से भी अधिक प्रासंगिक हो गया है। मनुष्य को नित नई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, लेकिन वह ठहरता नहीं है। चाहे वह जलवायु परिवर्तन की समस्या हो, तकनीकी परिवर्तन, या फिर सामाजिक असमानता—इन सभी समस्याओं के समाधान के लिए यात्रा निरंतर जारी रहती है।

निष्कर्ष

"पथ का अंत कभी नहीं होता" केवल एक विचार नहीं, बल्कि जीवन और समाज का शाश्वत सत्य है। साहित्य इस विचार को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत करता है, और समाज निरंतर अपने बदलाव के साथ इसे प्रमाणित करता है। संघर्ष और यात्रा का यह सिलसिला कभी नहीं रुकता, क्योंकि जब तक जीवन है, तब तक गति है।

इसलिए, चाहे कोई व्यक्ति हो या समाज, चाहे विचारधारा हो या सभ्यता—सबकी यात्रा सतत रूप से चलती रहती है। यही इस कथन का सार और सबसे महत्वपूर्ण संदेश है।

कृषि वस्तुओं में मूल्य अस्थिरता और भारतीय खाद्य निगम की स्थिरीकरण भूमिका

आनंद वी
मंडल प्रबंधक

भारत के कृषि बाजारों में कई आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में अक्सर तीव्र उतार चढ़ाव देखा जाता है। टमाटर और प्याज जैसी सब्जियाँ, साथ ही दालें और तिलहन, अक्सर बहुत अधिक और बहुत कम कीमतों के बीच झूलती रहती हैं। मौसम की परिस्थितियाँ, उत्पादन चक्र और आपूर्ति में बाधाएँ इन उतार चढ़ावों के मुख्य कारण होते हैं। चूँकि इन वस्तुओं की कीमतें मुख्य रूप से बाजार की ताकतों से निर्धारित होती हैं, इसलिए उत्पादन या वितरण में अचानक आने वाले झटकों का इन पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

टमाटर इसका एक स्पष्ट उदाहरण है। फसल के चरम मौसम में जब बाजार में आपूर्ति बहुत अधिक हो जाती है और भंडारण सुविधाएँ सीमित होती हैं, तब इसकी कीमत कई बार बहुत नीचे गिरकर लगभग 5–10 रुपये प्रति किलोग्राम तक पहुँच जाती है। लेकिन जैसे ही प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण आपूर्ति घटती है, कीमतें कुछ ही हफ्तों में तेजी से बढ़ सकती हैं। वर्ष 2023 में कई शहरों में टमाटर की कीमत 150–200 रुपये प्रति किलोग्राम से अधिक हो गई थी। ऐसी स्थिति अक्सर अत्यधिक वर्षा, बाढ़, हीटवेव, कीटों के हमले, फसल रोग या परिवहन व्यवस्था में बाधा जैसी परिस्थितियों के कारण पैदा होती है, जिससे उत्पादन घट जाता है और बाजार में आपूर्ति कम हो जाती है। दूसरी ओर, जब उत्पादन बहुत अधिक होता है तो बाजार में अधिशेष के कारण किसानों को अपनी उपज बहुत कम कीमत पर बेचनी पड़ती है। इसी तरह के उतार चढ़ाव प्याज, दालों और खाद्य तेलों में भी देखे जाते हैं, जहाँ वैश्विक बाजार, आयात निर्यात नीतियाँ और मौसम संबंधी घटनाएँ कीमतों को प्रभावित करती हैं।

इसके विपरीत, भारत के दो प्रमुख खाद्यान्न—चावल और गेहूँ—में इतने तीव्र उतार चढ़ाव शायद ही कभी देखने को मिलते हैं। इन अनाजों की अपेक्षाकृत स्थिर कीमतों के पीछे भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) की महत्वपूर्ण भूमिका है। खरीद, भंडारण और नियंत्रित बाजार बिक्री की निरंतर प्रक्रिया के माध्यम से एफसीआई अनाज बाजार में कीमतों को संतुलित रखने में मदद करता है।

सरकारी एजेंसियों द्वारा खरीदे गए अनाज को केंद्रीय पूल में बफर स्टॉक के रूप में संग्रहीत किया जाता है। यह भंडार सरकार को तब हस्तक्षेप करने की क्षमता देता है जब बाजार में कीमतों पर दबाव बढ़ने लगता है। हाल के अनुमानों के अनुसार भारत के केंद्रीय भंडार में लगभग 37 मिलियन टन चावल और लगभग 23 मिलियन टन गेहूँ उपलब्ध है, जो आपूर्ति प्रबंधन के लिए एक बड़ा सुरक्षा भंडार प्रदान करता है।

जब बाजार में गेहूँ या चावल की कीमतें बढ़ने लगती हैं, तब सरकार ओपन मार्केट सेल स्कीम (ओएमएसएस) के माध्यम से इन भंडारों को बाजार में जारी करती है। इस योजना के तहत एफसीआई आटा मिलों, व्यापारियों और अन्य बड़े खरीदारों को नीलामी के माध्यम से अनाज बेचता है, जिससे बाजार में आपूर्ति बढ़ती है और कीमतों पर नियंत्रण रहता है।

हाल के वर्षों में यह हस्तक्षेप काफी महत्वपूर्ण रहा है। वर्ष 2023–24 में सरकार ने कीमतों को नियंत्रित करने के लिए खुले बाजार में बिक्री हेतु लगभग 101.5 लाख मीट्रिक टन गेहूँ और 25 लाख मीट्रिक टन चावल उपलब्ध कराया। वर्ष 2024 की शुरुआत तक ओएमएसएस नीलामी के माध्यम से लगभग 75.26 लाख मीट्रिक टन गेहूँ बेचा जा चुका था। इसके अगले वर्ष, जब उत्पादन की स्थिति बेहतर हुई और कीमतें स्थिर रहीं, तब ओएमएसएस के तहत बिक्री घटकर लगभग 3 मिलियन टन रह गई, जबकि पिछले वर्ष यह लगभग 10.1 मिलियन टन थी। यह दर्शाता है कि सरकार बाजार की स्थिति के अनुसार अनाज की बिक्री को समायोजित करती है।

इस प्रकार अधिशेष उत्पादन के समय खरीद और कमी के समय नियंत्रित बिक्री की यह निरंतर प्रक्रिया भारत के प्रमुख खाद्यान्नों के लिए एक स्थिरीकरण चक्र बनाती है। जब उत्पादन अधिक होता है तो सरकारी खरीद अतिरिक्त आपूर्ति को अवशोषित कर लेती है और कीमतों को गिरने से बचाती है। वहीं, जब आपूर्ति कम होती है या कीमतें बढ़ने लगती हैं, तब बफर स्टॉक से अनाज जारी करके बाजार में संतुलन बनाया जाता है।

अन्य कृषि वस्तुओं के साथ तुलना करने पर इस प्रणाली की प्रभावशीलता और स्पष्ट हो जाती है। टमाटर, प्याज, दालें और तिलहन जैसी वस्तुएँ बाढ़, सूखा, हीटवेव, कीट प्रकोप और आपूर्ति श्रृंखला में बाधाओं जैसी जलवायु घटनाओं के प्रति अत्यधिक संवेदनशील रहती हैं, जिससे कीमतों में अचानक उछाल आ सकता है। वहीं दूसरी ओर, जब उत्पादन बहुत अधिक होता है तो पर्याप्त संस्थागत खरीद व्यवस्था के अभाव में कीमतें तेजी से गिर जाती हैं।

इसके विपरीत चावल और गेहूँ एक संगठित खाद्य प्रबंधन प्रणाली के अंतर्गत आते हैं, जिसकी आधारशिला भारतीय खाद्य निगम है। बफर स्टॉक प्रबंधन और ओएमएसएस जैसे रणनीतिक बाजार हस्तक्षेपों के माध्यम से सरकार देश के सबसे महत्वपूर्ण खाद्यान्नों की कीमतों को अपेक्षाकृत स्थिर बनाए रखने में सफल रही है, जबकि अन्य कृषि वस्तुओं में अभी भी तीव्र मूल्य अस्थिरता देखने को मिलती है।

ग्रीन इंडिया बनाम डिजिटल इंडिया: क्या हो विकास का सही पैमाना?

एन.मगेश
स.श्रे. III (सामान्य)

भूमिका

भारत 21वीं सदी में तेजी से विकास की ओर अग्रसर है, और इस विकास की दो प्रमुख धाराएँ उभरकर सामने आई हैं—ग्रीन इंडिया और डिजिटल इंडिया। एक ओर, ग्रीन इंडिया पर्यावरण-संरक्षण और सतत विकास पर केंद्रित है, तो दूसरी ओर, डिजिटल इंडिया आधुनिक तकनीक, इंटरनेट और डिजिटलीकरण को बढ़ावा देकर देश को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे ले जाने का प्रयास कर रहा है। ऐसे में यह सवाल उठता है कि भारत के विकास के लिए सही पैमाना क्या होना चाहिए—पर्यावरण-संरक्षण या डिजिटल प्रगति?

ग्रीन इंडिया: सतत विकास की ओर एक कदम

ग्रीन इंडिया मिशन (Green India Mission) भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण योजना है, जिसका उद्देश्य वनों का संरक्षण, हरित क्षेत्र का विस्तार और पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखना है।

ग्रीन इंडिया के फायदे:

1. पर्यावरण-संरक्षण: बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने में मदद करता है।
2. स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव: स्वच्छ हवा और हरित पर्यावरण लोगों के स्वास्थ्य में सुधार लाता है।
3. जैव विविधता की रक्षा: प्राकृतिक संसाधनों के संतुलन को बनाए रखता है और वन्यजीवों को बचाने में मदद करता है।
4. कृषि और जल-संरक्षण:हरित प्रयासों से कृषि उत्पादन को बनाए रखना और जल संसाधनों का संरक्षण संभव हो सकता है।

हालांकि, कुछ लोग ग्रीन इंडिया पर अधिक ध्यान देने को आर्थिक विकास की गति को धीमा करने वाला मानते हैं। उद्योगों पर प्रतिबंध, नए निर्माण कार्यों पर कड़े नियम, और ऊर्जा के लिए जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करने के प्रयासों को आर्थिक वृद्धि में बाधा समझा जाता है।

डिजिटल इंडिया: नवाचार और तकनीकी क्रांति

डिजिटल इंडिया (Digital India) प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 2015 में शुरू किया गया एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य देश को डिजिटल रूप से सक्षम बनाना है।

डिजिटल इंडिया के फायदे:

1. आर्थिक प्रगति: डिजिटल तकनीक और स्टार्टअप संस्कृति से देश की अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है।

2. शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार: ऑनलाइन शिक्षा और टेलीमेडिसिन सेवाओं के कारण लोगों को उच्च गुणवत्ता की सेवाएँ मिल रही हैं।

3. भ्रष्टाचार में कमी: डिजिटलीकरण से लेन-देन में पारदर्शिता आई है और भ्रष्टाचार कम हुआ है।

4. रोजगार के नए अवसर: ई-कॉमर्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), डेटा साइंस और साइबर सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़े हैं।

हालांकि, डिजिटल इंडिया के बढ़ते प्रभाव ने कुछ चुनौतियाँ भी प्रस्तुत की हैं—जैसे कि डिजिटल डिवाइड (शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच तकनीकी असमानता), साइबर सुरक्षा के खतरे, और बढ़ती तकनीकी निर्भरता।

क्या हो विकास का सही पैमाना?

1. संतुलित विकास आवश्यक

भारत जैसे विशाल और विविध देश में किसी एक पहलू को पूरी तरह से अपनाना व्यावहारिक नहीं होगा। यदि केवल ग्रीन इंडिया पर ध्यान दिया जाए, तो आर्थिक और तकनीकी प्रगति बाधित हो सकती है। वहीं, यदि केवल डिजिटल इंडिया को प्राथमिकता दी जाए, तो पर्यावरणीय असंतुलन गंभीर समस्याएँ उत्पन्न कर सकता है। इसलिए, *संतुलित विकास* का दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है।

2. ग्रीन और डिजिटल इंडिया का समावेशी मॉडल

हरित ऊर्जा और तकनीक का समन्वय: नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों (सौर और पवन ऊर्जा) को डिजिटल तकनीक के साथ जोड़ा जा सकता है ताकि ऊर्जा उत्पादन और खपत अधिक कुशल हो।

- स्मार्ट सिटीज़ और सस्टेनेबल इन्फ्रास्ट्रक्चर: डिजिटल इंडिया के तहत स्मार्ट शहरों का विकास इस तरह होना चाहिए कि वे पर्यावरण के अनुकूल भी हों।

- डिजिटल जागरूकता और पर्यावरणीय चेतना: ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में डिजिटल शिक्षा और पर्यावरणीय चेतना दोनों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

भारत का विकास सिर्फ तकनीकी प्रगति या सिर्फ हरित क्रांति पर निर्भर नहीं हो सकता। ग्रीन इंडिया और डिजिटल इंडिया का संतुलित समावेश ही सही विकास का पैमाना होना चाहिए। आधुनिक प्रौद्योगिकी को इस तरह से अपनाना चाहिए कि वह पर्यावरणीय संतुलन को नुकसान न पहुँचाए, और हरित विकास की रणनीतियाँ इस तरह से लागू होनी चाहिए कि वे आर्थिक और तकनीकी उन्नति में बाधा न बनें। यदि हम संतुलन बना पाए, तो भारत न केवल एक डिजिटल महाशक्ति बनेगा, बल्कि एक हरित और सतत भविष्य की ओर भी अग्रसर होगा।

कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा के दौरान विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन और पुरस्कार वितरण की कुछ झलकियां..

हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर हिंदी चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेते हुए अधिकारियों/कर्मचारियों के बच्चों की कुछ झलकियां ..

दक्षिण भारत की ऐतिहासिक दृश्य पर एक नज़र

भूमिका

विथ्याशेनी बी आर के
स.श्रे. III (तकनीकी)

दक्षिण भारत का इतिहास भारत की समृद्ध सभ्यता, संस्कृति और परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। यहाँ की ऐतिहासिक यात्रा प्राचीन द्रविड़ सभ्यता से लेकर चोल, पल्लव, विजयनगर साम्राज्य और ब्रिटिश शासन तक विस्तृत है। इस क्षेत्र ने स्थापत्य कला, भाषा, धर्म, व्यापार और सामाजिक संरचना में अभूतपूर्व योगदान दिया है। दक्षिण भारत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि न केवल भारत, बल्कि संपूर्ण एशिया के सांस्कृतिक विकास में भी महत्वपूर्ण रही है। इस निबंध में हम दक्षिण भारत की ऐतिहासिक यात्रा का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

दक्षिण भारत का भौगोलिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

दक्षिण भारत में चार प्रमुख राज्य—तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश (अब तेलंगाना सहित) शामिल हैं। यह क्षेत्र अपनी विशिष्ट द्रविड़ संस्कृति, मंदिर वास्तुकला, भाषा, नृत्य, संगीत और व्यापारिक संपर्कों के लिए प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र का इतिहास हजारों वर्षों पुराना है और इसे विभिन्न शक्तिशाली राजवंशों ने आकार दिया है।

1. प्राचीन काल: द्रविड़ सभ्यता और संगम युग

(क) द्रविड़सभ्यता और प्रारंभिक बसावट

दक्षिण भारत की सभ्यता बहुत प्राचीन है और माना जाता है कि यहाँ द्रविड़ जातियाँ हड़प्पा सभ्यता के समय से ही निवास कर रही थीं। हाल के पुरातात्विक खोजों से यह भी संकेत मिलता है कि दक्षिण भारत में एक उन्नत द्रविड़ संस्कृति विद्यमान थी, जो हड़प्पा संस्कृति से भी पुरानी हो सकती है।

(ख) संगम युग (ईसा पूर्व 300 - 300 ईस्वी)

संगम युग दक्षिण भारत के तमिल इतिहास का स्वर्ण युग माना जाता है। यह काल संगम साहित्य के विकास का काल था। इस दौरान तीन प्रमुख राजवंश—चेर, चोल और पांड्य राजवंशों ने दक्षिण भारत पर शासन किया।

चेर राजवंश (केरल): मलयालम भाषा और समुद्री व्यापार में योगदान।

चोल राजवंश (तमिलनाडु): सैन्य शक्ति और महान मंदिरों के निर्माण में योगदान।

पांड्य राजवंश (तमिलनाडु): साहित्य और वास्तुकला में महत्वपूर्ण योगदान।

इस काल में तमिल साहित्य का अत्यधिक विकास हुआ। संगम साहित्य में "शिलप्पदिकारम" और "मणिमेखलई" जैसे महाकाव्य शामिल हैं।

2. मध्यकालीन दक्षिण भारत: मंदिरों, व्यापार और शक्ति संघर्ष का युग

(क) पल्लव साम्राज्य (275 ईस्वी - 897 ईस्वी)

पल्लवों ने तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश के कुछ हिस्सों पर शासन किया।

- महाबलीपुरम (ममल्लापुरम) के प्रसिद्ध मंदिरों का निर्माण।

- कांचीपुरम को शिक्षा और बौद्ध धर्म का केंद्र बनाया।

- चीन और दक्षिण पूर्व एशिया के साथ व्यापारिक संबंध।

(ख) चोल साम्राज्य (850 ईस्वी - 1279 ईस्वी)

चोल साम्राज्य दक्षिण भारत का सबसे शक्तिशाली साम्राज्य था।

- राजराजा प्रथम और राजेंद्र चोल* ने इसे स्वर्णिम काल में पहुँचाया।

- बृहदेश्वर मंदिर (तंजावुर) का निर्माण।

- श्रीलंका, मलय द्वीप और दक्षिण पूर्व एशिया तक सैन्य विस्तार।

- चोलों ने स्थानीय प्रशासन और जल प्रबंधन में सुधार किया।

(ग) पांड्य और होयसल वंश (12वीं - 14वीं शताब्दी)

- पांड्य साम्राज्य ने मदुरै को कला और साहित्य का केंद्र बनाया।

- होयसल राजवंश (कर्नाटक) ने बेलूर और हलेबिड के अद्भुत मंदिरों का निर्माण किया।

3. विजयनगर साम्राज्य: दक्षिण भारत का स्वर्ण युग (1336 - 1646 ईस्वी)

विजयनगर साम्राज्य की स्थापना हरिहर और बुक्का राय ने की थी।

- कृष्णदेव राय (1509 - 1529 ईस्वी) ने इस साम्राज्य को चरमोत्कर्ष तक पहुँचाया।

- हम्पी (कर्नाटक) इस साम्राज्य की राजधानी थी।

- कला, साहित्य, प्रशासन और सैन्य संगठन का उत्कर्ष।

- बहमनी सल्तनत और दक्कन सुल्तानों से संघर्ष।

लेकिन 1565 में तालिकोटा के युद्ध में विजयनगर साम्राज्य की हार हो गई और धीरे-धीरे यह पतन की ओर बढ़ गया।

4. मुस्लिम शासन और मराठा प्रभाव (17वीं - 18वीं शताब्दी)

(क) बीजापुर और गोलकुंडा सल्तनत (1518 - 1687)

- बहमनी साम्राज्य के पतन के बाद दक्षिण भारत में मुस्लिम सल्तनतें बनीं।

- गोलकुंडा (तेलंगाना) अपने हीरे की खानों के लिए प्रसिद्ध था।

- बीजापुर के सुल्तानों ने शानदार स्मारकों का निर्माण किया।

(ख) मराठा प्रभाव

- शिवाजी (1674) ने दक्षिण भारत में मुगलों के प्रभाव को कम किया।

- मराठों ने तंजावुर और मैसूर में प्रभाव बढ़ाया।

5. यूरोपीय उपनिवेशवाद और ब्रिटिश शासन (17वीं - 20वीं शताब्दी)

(क) यूरोपीय शक्त...

कोयंबतूर की भौगोलिक स्थिति पर अभिव्यक्ति

दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य में स्थित *कोयंबतूर* अपनी अनूठी भौगोलिक स्थिति, समृद्ध जलवायु, कृषि उत्पादकता और औद्योगिक विकास के लिए प्रसिद्ध है। इसे "दक्षिण भारत का मैनचेस्टर" कहा जाता है, क्योंकि यह कपड़ा और टेक्सटाइल उद्योग का प्रमुख केंद्र है। इसकी भौगोलिक विशेषताएँ इसे न केवल व्यापार और उद्योग के लिए अनुकूल बनाती हैं, बल्कि इसे एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और पर्यटन स्थल भी बनाती हैं।

भौगोलिक स्थिति और स्थलाकृति

- कोयंबतूर तमिलनाडु के पश्चिमी भाग में स्थित है और यह राज्य का दूसरा सबसे बड़ा शहर है।

- इसकी भौगोलिक स्थिति 11.01° उत्तर अक्षांश और 76.96° पूर्व देशांतर पर है।

- यह नीलगिरी पहाड़ियों और पश्चिमी घाट के करीब स्थित है, जिससे यहाँ की जलवायु तुलनात्मक रूप से ठंडी और सुखद बनी रहती है।

- शहर की औसत ऊँचाई 427 मीटर (1400 फीट) समुद्र तल से ऊपर है।

- कोयंबतूर की पश्चिमी सीमा केरल राज्य से लगती है, जो इसे एक रणनीतिक व्यापारिक केंद्र बनाती है।

जलवायु और मौसम

- कोयंबतूर की जलवायु *उष्णकटिबंधीय आर्द्र और शुष्क (Tropical Wet and Dry Climate) प्रकार की है।

- यहाँ सालभर तापमान संतुलित रहता है—गर्मियों में औसत तापमान 35°Cऔर सर्दियों में 15°C के आसपास रहता है।

- दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पूर्व दोनों मानसूनों से वर्षा प्राप्त होती है*, जिससे कृषि के लिए यह उपयुक्त स्थान है।

नदियाँ और जल संसाधन

- कोयंबतूर से बहने वाली प्रमुख नदी *नोय्याल नदी* है, जो भवानी और कावेरी नदियों की सहायक नदी है।

- यहाँ कई झीलें और जलाशय भी हैं, जिनमें *सिंगानल्लूर झील, सेल्वाक्कडु झील और वेल्लियांगिरी पहाड़ियों में स्थित जल स्रोत* प्रमुख हैं।

वनस्पति और जीव-जंतु

- पश्चिमी घाट के नजदीक होने के कारण, कोयंबतूर के आसपास हरियाली और जैव विविधता पाई जाती है।

- यहाँ वेल्लियांगिरी पहाड़ियाँ, अन्नामलाई टाइगर रिजर्व और साइलेंट वैली नेशनल पार्क जैसे प्राकृतिक क्षेत्र हैं।

- क्षेत्र में नारियल, केले, आम और सुपारी की खेती प्रचुर मात्रा में होती है।

आर्थिक और औद्योगिक महत्व

- कोयंबतूर भारत का प्रमुख कपड़ा और टेक्सटाइल उद्योग केंद्र है, जहाँ सूती वस्त्रों का बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है।

- यह भारत का दूसरा सबसे बड़ा इंजन पंप और मोटर निर्माण केंद्र भी है।

- यहाँ आईटी पार्क, इंजीनियरिंग कॉलेज और ऑटोमोबाइल उद्योग भी विकसित हो रहे हैं।

निष्कर्ष

कोयंबतूर अपनी अद्भुत भौगोलिक स्थिति के कारण तमिलनाडु का एक महत्वपूर्ण औद्योगिक, व्यापारिक और पर्यटन केंद्र है। यहाँ की जलवायु, प्राकृतिक संसाधन और पश्चिमी घाट की निकटता इसे कृषि और उद्योग दोनों के लिए उपयुक्त बनाती है। अपनी प्रगति और प्राकृतिक सुंदरता के कारण यह दक्षिण भारत का एक महत्वपूर्ण शहर बना हुआ है।

हिंदी की महिमा

हिंदी है हमारी भाषा प्यारी,
समानता की यह धारा भारी।
संस्कृति की यह सुंदर पहचान,
भारत की आवाज़ है यह महान।
हर शब्द में बसी है यह शक्ति,
हमें जोड़ती है, नहीं करती दफ्ती।
मातृभूमि की धड़कन, इसका स्वर,
हमें गर्व है इस पर हर एक दौर।

हिंदी के बोलों में बसी है सगाई,
हर दिल में बसी है, न कोई पराई।
रखें इसे हम ऊँचाई पर,
कदम से कदम मिलाकर चलें,
यही हमारा कर्तव्य है।
हिंदी की मिठास, जो दूर करें दूरी,
हमारी पहचान, हमारी पूरी।
सिंहासन की यह शान बढ़ाए,
हिंदी का गौरव सदैव बढ़ाए।

हरिप्रकाश वी
स.श्रे. ||| (अगार)

भारत माता

बिंदुमोल ऐल
प्रबंधक (डिपो)

भारत माता, तेरी जयकार हो,
तेरे चरणों में हर दिल की हार हो।
तेरी गोदी में खेलें हजारों बेटियां,
तेरे आंचल में बसें सुख-शांति की रतियां।
तेरी धरती से निकली जीवन की ज्योति,
तेरे कण-कण में बसी है हर एक प्रगति।
तेरी नदियों में बहती है शांति की गंगा,
तेरे पहाड़ों में बसी है वीरता की तंगगा।
तेरी भूमि पर हर भाषा बोलती है,
हर धर्म के लोग एक साथ चलते हैं।

तेरे रत्नों से सजता है हर गांव,
तेरे आशीर्वाद से बनते हैं सच्चे इंसान।
भारत माता, तेरा सीना विशाल है,
तेरी गाथाएं अमर और हर्षित तलवार हैं।
तेरी शान को हम सब मिलकर बढ़ाएं,
तेरे अद्वितीय रूप को हर दिल में समाएं।
तेरे संस्कारों को संजोए रखना है,
तेरे हक में हर संघर्ष लड़ना है।
भारत माता की शक्ति से हम सजे हैं,
तेरी जयकार में हर दिल रमे हैं।

भारतीय खाद्य निगम में उद्यमी अवसर

एन प्रवीण
स.श्रे. III (अगार)

भारतीय खाद्य निगम (भा.खा.नि.) एक सरकारी स्वामित्व वाली संगठन है जो देश भर में खाद्यान्न की खरीद, भंडारण और वितरण के लिए जिम्मेदार है। एफसीआई की वार्षिक खरीद 30 मिलियन टन से अधिक खाद्यान्न है, जो खाद्यान्न खरीद, भंडारण, वितरण और प्रसंस्करण में उद्यमी अवसर प्रदान करता है।

खाद्यान्न खरीद में अवसर

भा.खा.नि. देश भर के किसानों से विभिन्न खरीद एजेंसियों के माध्यम से खाद्यान्न खरीदता है। यह उद्यमियों के लिए किसानों और भा.खा.नि. के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करने का अवसर प्रदान करता है।

- खरीद एजेंसी: उद्यमी खरीद एजेंसियां स्थापित कर सकते हैं जो किसानों से खाद्यान्न खरीदती हैं और उन्हें भा.खा.नि को बेचती हैं। भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद की एक रिपोर्ट के अनुसार, भा.खा.नि ने 2020-21 में 28.4 मिलियन टन गेहूं और 34.2 मिलियन टन चावल की खरीद की (आईआईएमए, 2022)।

किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ): उद्यमी एफपीओ स्थापित कर सकते हैं जो किसानों से खाद्यान्न को एकत्रित करते हैं और उन्हें भा.खा.नि. को आपूर्ति करते हैं। कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के अनुसार, भारत में 10,000 से अधिक एफपीओ पंजीकृत हैं, और कई अन्य पंजीकरण की प्रक्रिया में हैं (कृषि मंत्रालय, 2022)।

बाजार अनुसंधान और विश्लेषण: उद्यमी किसानों और खरीद एजेंसियों के लिए बाजार अनुसंधान और विश्लेषण सेवाएं प्रदान कर सकते हैं, जिससे उन्हें खाद्यान्न खरीद के बारे में सूचित निर्णय लेने में मदद मिलती है। राष्ट्रीय कृषि विपणन संस्थान की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय कृषि बाजार 2020 से 2025 तक 10% की वार्षिक दर से बढ़ने की उम्मीद है (एनआईएएम, 2020)।

खाद्यान्न भंडारण में अवसर

भारतीय खाद्य निगम को खाद्यान्न के भंडारण के लिए विशाल भंडारण सुविधाओं की आवश्यकता है। यह उद्यमियों के लिए भा.खा.नि. को भंडारण सेवाएं प्रदान करने का अवसर प्रदान करता है।

निजी भंडारण: उद्यमी निजी भंडारण सुविधाएं विकसित कर सकते हैं जो भा.खा.नि. के भंडारण मानकों को पूरा करती हैं और उन्हें भा.खा.नि. को किराए पर दे सकते हैं। भारतीय रिजर्व बैंक की एक रिपोर्ट के

अनुसार, भारतीय भंडारण उद्योग 2020 से 2025 तक 12% की वार्षिक दर से बढ़ने की उम्मीद है (आरबीआई, 2020)।

सिलोस और गोदाम: उद्यमी सिलोस और गोदाम बना सकते हैं जो खाद्यान्न के भंडारण के लिए उपयुक्त

हैं और उन्हें भा.खा.नि को किराए पर दे सकते हैं। भा.खा.नि के अनुसार, संगठन की 35 मिलियन टन से अधिक खाद्यान्न की भंडारण क्षमता है (भा.खा.नि., 2022)।

लॉजिस्टिक्स और परिवहन: उद्यमी भा.खा.नि की भंडारण सुविधाओं के प्रबंधन में मदद करने के लिए लॉजिस्टिक्स और परिवहन सेवाएं प्रदान कर सकते हैं। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय लॉजिस्टिक्स उद्योग 2020 से 2025 तक 10% की वार्षिक दर से बढ़ने की उम्मीद है (एमओआरटीएच, 2020)।

खाद्यान्न वितरण में अवसर

भा.खा.नि राज्य सरकारों, राशन की दुकानों और अन्य संगठनों सहित विभिन्न हितधारकों को खाद्यान्न वितरित करता है। यह उद्यमियों के लिए भा.खा.नि को वितरण सेवाएं प्रदान करने का अवसर प्रदान करता है।

वितरण नेटवर्क: उद्यमी वितरण नेटवर्क स्थापित कर सकते हैं जो भा.खा.नि को अपने हितधारकों को खाद्यान्न वितरित करने में मदद करते हैं। राष्ट्रीय कृषि विपणन संस्थान की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय कृषि बाजार 2020 से 2025 तक 10% की वार्षिक दर से बढ़ने की उम्मीद है (एनआईएएम, 2020)।

परिवहन सेवाएं: उद्यमी भा.खा.नि को अपनी भंडारण सुविधाओं से अपने हितधारकों तक खाद्यान्न परिवहन में मदद करने के लिए परिवहन सेवाएं प्रदान कर सकते हैं। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय लॉजिस्टिक्स उद्योग 2020 से 2025 तक 10% की वार्षिक दर से बढ़ने की उम्मीद है (एमओआरटीएच, 2020)।

अंतिम-मील वितरण: उद्यमी भा.खा.नि को दूरस्थ और दुर्गम क्षेत्रों में खाद्यान्न वितरित करने में मदद करने के लिए अंतिम-मील वितरण सेवाएं प्रदान कर सकते हैं। भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद की एक रिपोर्ट के अनुसार, एफसीआई के पास 2,000 से अधिक डिपो और 35,000 से अधिक राशन की दुकानें हैं (आईआईएमए, 2022)।

खाद्य प्रसंस्करण में अवसर

खाद्य प्रसंस्करण इकाइयां:

उद्यमी खाद्य प्रसंस्करण इकाइयां स्थापित कर सकते हैं जो एफसीआई से खरीदे गए खाद्यान्न को प्रसंस्करण करती हैं। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय के अनुसार, भारतीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग 2020 से 2025 तक 15% की वार्षिक दर से बढ़ने की उम्मीद है (एमओएफपीआई, 2020)।

मूल्य वर्धित उत्पाद: उद्यमी भा.खा.नि से खरीदे गए खाद्यान्न का उपयोग करके मूल्य वर्धित उत्पाद विकसित कर सकते हैं, जैसे कि आटा, चावल और अन्य प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ। राष्ट्रीय कृषि विपणन संस्थान की

एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में मूल्य वर्धित खाद्य उत्पादों की मांग बढ़ रही है, जो बदल रही उपभोक्ता प्राथमिकताओं और बढ़ती आय के कारण है (एनआईएएम, 2020)।

निर्यात उन्मुख इकाइयां:

उद्यमी निर्यात उन्मुख इकाइयां स्थापित कर सकते हैं जो अन्य देशों को निर्यात के लिए खाद्यान्न को प्रसंस्करण करती हैं। वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के अनुसार, भारत के कृषि निर्यात 2020 से 2025 तक 10% की वार्षिक दर से बढ़ने की उम्मीद है (एमओसीआई, 2020)।

चुनौतियां और अवसर

भा.खा.नि में उद्यमी अवसरों के बावजूद, कुछ चुनौतियां हैं जिन्हें उद्यमियों को पार करना होगा।

नियामक ढांचा:

एफसीआई एक जटिल नियामक ढांचे के तहत कार्य करता है जिसे उद्यमियों को नेविगेट करना होगा। भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद की एक रिपोर्ट के अनुसार, भा.खा.नि का नियामक ढांचा जटिल और अक्सर अस्पष्ट है, जो उद्यमियों के लिए इस क्षेत्र में काम करना मुश्किल बनाता है (आईआईएमए, 2022)।

प्रतिस्पर्धा:

भा.खा.नि की खरीद, भंडारण और वितरण की गतिविधियां अक्सर स्थापित खिलाड़ियों द्वारा नियंत्रित की जाती हैं, जो नए उद्यमियों के लिए बाजार में प्रवेश करना मुश्किल बनाती हैं। राष्ट्रीय कृषि विपणन संस्थान की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय कृषि बाजार अत्यधिक प्रतिस्पर्धी है, जिसमें कई स्थापित खिलाड़ी कार्यरत हैं (एनआईएएम, 2020)।

बुनियादी ढांचा:

भा.खा.नि की गतिविधियों के लिए महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे के निवेश की आवश्यकता है, जिसमें भंडारण सुविधाएं, परिवहन नेटवर्क और लॉजिस्टिक्स सिस्टम शामिल हैं। भारतीय रिजर्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय कृषि क्षेत्र को महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें अपर्याप्त भंडारण सुविधाएं और परिवहन नेटवर्क शामिल हैं (आरबीआई, 2020)।

निष्कर्ष

निष्कर्ष में, भारतीय खाद्य निगम खाद्यान्न खरीद, भंडारण, वितरण और प्रसंस्करण में उद्यमी अवसर प्रदान करता है। जबकि उद्यमियों को पार करने के लिए चुनौतियां हैं, भा.खा.नि की गतिविधियां नवाचार और विकास के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती हैं। ए भा.खा.नि की गतिविधियों का लाभ उठाकर, उद्यमी देश की खाद्य सुरक्षा और आर्थिक विकास में योगदान करने वाले सफल व्यवसाय विकसित कर सकते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर उपलब्धि की कुछ झलकियाँ... सपनों को सच करती नारी...

भारतीय खाद्य निगम के मजदूर

धाना रूपा एम
स.श्रे. ।।। (तकनीकी)

खलिहानों में उठती धूल, शानों पर बोझ भारी,
भारत के खाद्य निगम के मजदूर, जीवन से सवारी।
सुबह से शाम तक की मेहनत, न कोई आराम,
हर कदम में छुपा संघर्ष, हर मेहनत में नाम।
खेतों से अनाज उठाते, गाड़ी में भरते हैं,
पसीने की एक-एक बूँद से सपने बड़े करते हैं।
घर में माँ, बाप, और बच्चे होते हैं इंतजार,
वो सोचते हैं, हर दिन कैसे बढ़ेगा उनका परिवार।
पत्नी की मुस्कान, बच्चों की चहचहाहट,
उनकी आँखों में उम्मीद, और मन में सच्चाई की बात।
कभी कांधों पर अनाज, कभी हड्डियों में दर्द,
फिर भी चलते जाते हैं, ना थकते हैं, ना डरते हैं।
उनकी आँखों में एक सपना पलता है,
बच्चों के चेहरे पर खुशियाँ झलकता है।
माँ-बाप की तकलीफों को वो छुपाए रहते हैं,
बच्चों के उज्जवल भविष्य को अपनी मेहनत से बनाते हैं।
हर दिन उनका संघर्ष एक नई कहानी बनती है,
एक उम्मीद की लहर, जो हर कठिनाई को काटती है।
खुशियों की झलक जब घर में आती है,
उनकी मेहनत, उनका प्यार, सब कुछ सच साबित होता है।
भारत के खाद्य निगम के मजदूर, असली नायक,
जो अपने पसीने से हर परिवार का बनाते हैं भाग्य।
उनकी मेहनत और संघर्ष से ही बढ़ता देश,
जो हर बच्चे के सपनों को करता है साकार, बिना किसी भेष।
किसान की अद्भुत दास्तान"
खेतों में सूरज की किरणों से वह जागे,
सीने में संघर्ष, पैरों में जंजीरें सी भागे।

कार्यस्थल पर अनुशासन और ज़िम्मेदारी

के सेकर
स.श्रे.-III (डिपोट)

कार्यस्थल पर अनुशासन और ज़िम्मेदारी किसी भी संगठन की सफलता के दो प्रमुख आधार स्तंभ हैं। अनुशासन का अर्थ है नियमों का पालन करना, समय का पालन करना तथा पेशेवर आचरण बनाए रखना। वहीं, ज़िम्मेदारी का आशय है अपने कार्यों की जवाबदेही स्वीकार करना और उन्हें पूर्ण निष्ठा के साथ संपन्न करना। ये दोनों तत्व मिलकर एक उत्पादक, कुशल और संतुलित कार्य वातावरण का निर्माण करते हैं। आज की प्रतिस्पर्धी दुनिया में संगठन केवल कौशल पर ही नहीं, बल्कि कर्मचारियों के दृष्टिकोण और व्यवहार पर भी निर्भर करते हैं।

कार्यस्थल पर अनुशासन की शुरुआत छोटी-छोटी आदतों से होती है, जैसे समय पर पहुँचना, निर्धारित समय-सीमा के भीतर कार्य पूर्ण करना और संगठन की नीतियों का सम्मान करना। एक अनुशासित कर्मचारी समय के महत्व को समझता है और उसका समुचित उपयोग करता है। समय की पाबंदी यह सुनिश्चित करती है कि कार्य बिना किसी बाधा या विलंब के संपन्न हो सके। जब सभी कर्मचारी अनुशासन का पालन करते हैं, तो संगठन में व्यवस्था और समन्वय बना रहता है। इसके विपरीत, अनुशासन की कमी से अव्यवस्था, समय-सीमा का उल्लंघन तथा उत्पादकता में कमी आती है।

अनुशासन के समान ही ज़िम्मेदारी भी अत्यंत आवश्यक है। इसका अर्थ है अपने कार्यों की पूर्ण जिम्मेदारी लेना और उनके परिणामों को स्वीकार करना। एक ज़िम्मेदार कर्मचारी बिना निरंतर निगरानी के भी अपने कार्यों को कुशलतापूर्वक संपन्न करता है। ज़िम्मेदारी में ईमानदारी, पारदर्शिता तथा संगठन के लक्ष्यों के प्रति समर्पण शामिल होता है। ऐसे कर्मचारी टीम तथा प्रबंधन के बीच विश्वास स्थापित करने में सहायक होते हैं।

कार्यस्थल पर अनुशासन और ज़िम्मेदारी पेशेवर संबंधों को सुदृढ़ बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सहकर्मियों का सम्मान करना, प्रभावी संचार बनाए रखना तथा टीम भावना के साथ कार्य करना नैतिक आचरण का अंग है। एक ज़िम्मेदार व्यक्ति दूसरों की बात ध्यानपूर्वक सुनता है, सहयोग करता है और आवश्यकता पड़ने पर सहायता भी प्रदान करता है। इससे एक सकारात्मक और

प्रेरणादायक वातावरण का निर्माण होता है, जहाँ कर्मचारी स्वयं को महत्वपूर्ण और प्रेरित अनुभव करते हैं।

इसके अतिरिक्त, नियमों और विनियमों का पालन करना भी अत्यंत आवश्यक है। प्रत्येक संगठन अपने कार्यों को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए कुछ दिशानिर्देश निर्धारित करता है। इनका पालन करने से न केवल अनुशासन बना रहता है, बल्कि कर्मचारियों के बीच समानता और निष्पक्षता भी सुनिश्चित होती है। नियमों की अवहेलना से विवाद, भ्रांतियाँ तथा कभी-कभी कानूनी समस्याएँ भी उत्पन्न हो सकती हैं।

अनुशासन और ज़िम्मेदारी व्यक्तिगत विकास में भी सहायक होते हैं। एक अनुशासित व्यक्ति उत्तम कार्य नैतिकता, प्रभावी समय प्रबंधन तथा सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करता है। वहीं, ज़िम्मेदार व्यक्ति चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करते हुए आत्मविश्वास अर्जित करता है। ये गुण करियर उन्नति और नेतृत्व क्षमता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वास्तव में, जो व्यक्ति अनुशासन और ज़िम्मेदारी का पालन करते हैं, वे प्रायः सफल नेता बनते हैं।

अंततः, कार्यस्थल पर अनुशासन का सीधा संबंध संगठन की सफलता से होता है। जब कर्मचारी अनुशासित और ज़िम्मेदार होते हैं, तो उत्पादकता में वृद्धि होती है, त्रुटियाँ कम होती हैं और लक्ष्यों की प्राप्ति सुगम हो जाती है। ऐसे संगठन उत्तम प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं और उन्हें अधिक अवसर मिलते हैं। इसके विपरीत, अनुशासन की कमी से आर्थिक हानि तथा कमजोर प्रदर्शन का सामना करना पड़ सकता है

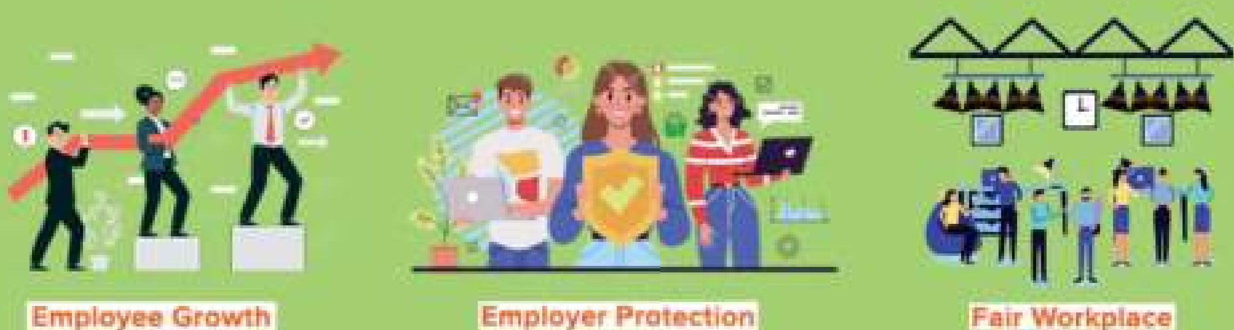

क्या आप जानते हैं?

कहा जाता है कि खेती की जाने वाली चावल की 40,000 से ज़्यादा किस्में (घास की प्रजाति ओरिज़ासैटिवा) मौजूद हैं। लेकिन सटीक आँकड़ा अनिश्चित है। खेती की जाने वाली चावल और जंगली प्रजातियों के 90,000 से ज़्यादा नमूने अंतर्राष्ट्रीय चावल जीन बैंक में संग्रहीत हैं और इन का इस्तेमाल दुनिया भर के शोधकर्ता करते हैं।

चावल की दो प्रमुख उप-प्रजातियाँ हैं जो खेती की जाने वाली किस्मों के भारी बहुमत के लिए ज़िम्मेदार हैं – इंडिका और जैपोनिका। इंडिका चावल की किस्मों को आमतौर पर लंबे दाने के रूप में वर्गीकृत किया जाता है, जबकि जैपोनिका चावल की किस्में मध्यमया छोटे दाने वाली हो सकती हैं।

आर मोहनप्रिया
स.श्रे. ॥ (तकनीकी)

किसान की अद्भुत दास्तान

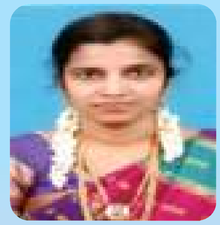

शरण्या एस
सहायक श्रेणी-III (सामान्य)

हाथों में हल, आँखों में अन्न की आस,

कभी फसलें लहराईं, कभी आंधियों ने किया तंग।

रोपता था बीज, सींचता था मिट्टी को प्यार से,

कभी बारिश तो कभी सूखा, सहे सारी डर से।

सपने थे बड़े, और हिम्मत का था रंग,

पर बदले में मिली, सूखी रोटी और तंग।

आने वाली पीढ़ी के लिए करता था प्रयास,

किसी ने न पूछा, उसकी कीमत, न उसकी प्यास।

माना कि उसने दूसरों के लिए किया त्याग,

पर क्या मिला उसे? एक खामोश दुख और भाग।

बीज बोते वक्त उसने सोचा था शायद यह फल लाएगा,

लेकिन खेत में उगे फसल, किसी और के घर जाएगा।

किसान की आँखों में उम्मीदों की चिंगारी होती,

पर उसे हासिल क्या? सिर्फ कुछ रूखी रोटियाँ मिलती।

आज उसकी मेहनत पर किसी ने सवाल नहीं उठाया,

उसकी सच्चाई पर कोई न न्याय किया।

जो हल चलाता है, वही भूखा सोता है,

पर जो इनका लाभ उठाता है, वही हमेशा रोता है।

किसान का जीवन, कोई समझे न उसका दर्द,

वह खेती करता है, और उसे मिलता है केवल अधूरा मर्द।

कभी न आए बदलाव, जब तक खुद न उठे आवाज,

किसान को ना केवल हल चाहिए, बल्कि सम्मान की

साज।

मंडल कार्यालय कोयंबत्तूर में आयोजित रा.का.स. बैठक की की कुछ झलकियाँ....

मंडल कार्यालय, कोयंबत्तूर द्वारा हिंदी कार्यशाला बैठक की कुछ झलकियाँ....

जी.पी.एस: आप यहाँ हैं

सौम्या रसिका एस एस
स.श्रे. III (सामान्य)

रवि को एक महत्वपूर्ण मीटिंग के लिए देर हो रही थी, इसलिए उसने दफ्तर जल्दी पहुँचने के लिए अपने जी.पी.एस. पर भरोसा करने का फैसला किया। जैसे ही वह हाईवे पर तेज़ी से आगे बढ़ा, GPS ने अचानक कहा, "500 फ़ीट के बाद, बाएँ मुड़ें।"

रवि ने इधर-उधर देखा। "क्या? वहाँ कुछ भी नहीं है।" जी.पी.एस ने दोहराया, "अब बाएँ मुड़ें।" घबड़ाहट बढ़ने पर, रवि ने आदेश को अनदेखा किया और गाड़ी चलाता रहा। "शायद यह कोई गड़बड़ी है," उसने बुदबुदाया।

जी.पी.एस ने ज़ोर दिया, "अब बाएँ मुड़ें, या परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहें।" रवि, अब पूरी तरह से भ्रमित, फिर से इधर-उधर देखने लगा। "क्या परिणाम?" उसने सोचा। लेकिन सिर्फ़ जिज्ञासा से, वह एक छोटी सी मिट्टी की सड़क पर बाएँ मुड़ गया।

जी.पी.एस ने आवाज़ दी, "आप अपने गंतव्य पर पहुँच गए हैं। कहीं नहीं के बीच में आपका स्वागत है।" रवि ने खाली मैदान को देखता रहा। वहाँ कोई दफ्तर नहीं था, सिर्फ़ गायें थीं और एक बहुत ही भ्रमित किसान उसे हाथ हिला रहा था।

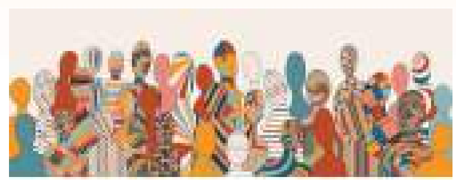

उसका फ़ोन बजा—उसका बॉस। "रवि, तुम कहाँ हो?"

"मैं... अभि, मैदान में हूँ। जी.पी.एस. मुझे यहाँ ले आया।"

थोड़ी देर के लिए विराम हुआ। फिर उसके बॉस ने कहा, "अच्छा, कम से कम तुम नई जगहें खोजने में अच्छे हो।"

ये है मेरा वारिस जिसने मेरे बाल खींचे

आतीरा ए
स.श्रे. III (तकनीकी)

"अरे! ये रहा तेरा वारिस," माँ ने कहा।
आई वो, और उसके बाल खींच लिया।

मन से प्रसन्न, पर मेहनती सबसे ज्यादा,
भूख लगी थी, पर चेहरा वो चिरपि सदा।

खालीपन को पीछे छोड़, किताबों से भरा,
वो चिरपि चेहरा अब सीनोरिटा बना।
और झुर्रियों वाला बुढ़ा उस मूर्खतंत्र में,
हर क्योंकि जवाब ढूँढे सपनों की बस्ती में।

मुस्काया वो, फिर आई बसंत की बयार,
किताबों के फल से सजा उसका संसार।
मुस्काया फिर, "ये है मेरा वारिस असली,
जिसने खींचे थे मेरे बाल कभी हंसी-खुशी।"

श्यामाचरण दुबे

ज.जनन्या
(सुपुत्रि-श्री एस जनकर)
स.श्रे. III (अगार)

श्यामाचरण दुबे का जन्म सन् 1922 में मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में हुआ। उन्होंने नागपुर विश्यविद्धालय से मानव विज्ञान में पी. एच. डी. की। वे भारत के अग्रणी समाज वैज्ञानिक रहे हैं। उनका देहांत सन् 1996 में हुआ।

मानव और संस्कृति, परंपरा और इतिहास बोध, संस्कृति तथा शिक्षा, समाज और भविष्य, भारतीय ग्राम, संक्रमण की पीड़ा, विकास का समाज शास्त्र, समय और संस्कृति हिंदी में उनकी प्रमुख पुस्तकें हैं। प्रो. दुबे ने विभिन्न विश्वविद्धालयों में अध्यापन किया तथा अनेक संस्थानों में प्रमुख पदों पर रहे। जीवन, समाज और संस्कृति के ज्वलंत विषयों पर उनके विश्लेषण एवं स्थापनाएँ उल्लेखनीय हैं। भारत की जनजातियों और ग्रामिण समुदायों पर केंद्रित उनके लेखों ने बहुत समुदाय का ध्यान आकर्षित किया है। वे जटिल विचारों को तार्किक विश्लेषण के साथ सहज भाषा में प्रस्तुत करते हैं।

लोकक्तियाँ / सूक्तियाँ

आर. मंगलेश्वरी
स.श्रे. I (तकनीकी)

- सोने-चाँदी से बढ़कर बुद्धि और समझ का मूल्य होता है।
- जैसे सोना-चाँदी अग्नि में परखे जाते हैं, वैसे ही ईश्वर मनुष्य के हृदय को परखता है।
- गरीब पर दया करना, ईश्वर को उधार देने के समान है—जिसका फल अवश्य मिलता है।
- माता-पिता का सम्मान जीवन भर करना चाहिए, विशेषकर उनके वृद्धावस्था में।
- शत्रु के साथ भी मानवता का व्यवहार करना ही सच्ची महानता है।
- मनुष्य की वास्तविक परख उसकी प्रशंसा और आलोचना से होती है।
- जो बुद्धि से प्रेम करता है, वही अपने जीवन का सच्चा हितैषी होता है।

भारतीय खाद्य निगम: राष्ट्र के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने वाला संगठन

मोहन राजा वी बी
स.श्रे. III (अगार)
एफ.एस.डी. पीलमेडु

भारतीय खाद्य निगम (भा.खा.नि.) एक प्रतिष्ठित संगठन है जो राष्ट्र के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 1965 में स्थापित, भा.खा.नि. देश की बढ़ती आबादी की मांग को पूरा करने के लिए खाद्यान्नों की स्थिर आपूर्ति बनाए रखने के लिए निरंतर काम कर रहा है।

उद्देश्य और कार्य

भा.खा.नि. का प्राथमिक उद्देश्य लोगों को उचित मूल्य पर खाद्यान्न प्रदान करना है। इसके लिए,

संगठन कई प्रमुख कार्य करता है:

1. किसानों से खाद्यान्नों की खरीद
2. गोदामों में खाद्यान्नों का भंडारण और रख रखाव
3. राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में खाद्यान्नों का वितरण
4. सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) जैसी खाद्य सुरक्षा योजनाओं का कार्यान्वयन

प्रयास और उपलब्धियां

भा.खा.नि. ने अपने संचालन में सुधार करने और राष्ट्र की बेहतर सेवा करने के लिए कई पहल

की शुरुआत की है:

1. पारदर्शिता और दक्षता के लिए ऑनलाइन खरीद प्रणाली
2. वास्तविक समय निगरानी के लिए गोदाम प्रबंधन प्रणाली
3. सुरक्षित और पौष्टिक खाद्यान्न सुनिश्चित करने के लिए गुणवत्ता नियंत्रण उपाय

वर्षों से, भा.खा.नि. ने कई मील के पत्थर हासिल किए हैं, जिनमें शामिल हैं:

1. वार्षिक रूप से 300 मिलियन टन से अधिक खाद्यान्नों की खरीद
2. 30 मिलियन टन से अधिक का बफर स्टॉक बनाए रखना
3. पीडीएस के माध्यम से 800 मिलियन से अधिक लोगों को खाद्यान्नों का वितरण

निष्कर्ष

भारतीय खाद्य निगम एक महत्वपूर्ण संस्था है जो पांच दशकों से अधिक समय से राष्ट्र की सेवा कर रही है। अपने निरंतर प्रयासों के माध्यम से, एफसीआई ने लाखों भारतीयों के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की है, इसे देश के खाद्य तंत्र का एक अभिन्न अंग बना दिया है।

बैडमिंटन

आर कार्तिकेयन
स.श्रे. III (सामान्य)

"बैडमिंटन में, यह केवल शटल को मारने के बारे में नहीं है-यह आपके प्रतिद्वंद्वी को पछाड़ने के बारे में है।"

"चैंपियन केवल स्मैश से नहीं, बल्कि धैर्य, गति और रणनीति से बनते हैं।"

"हर ड्रॉप शॉट, हर रैली, हर अंक-इसे ऐसे खेलें जैसे यह मायने रखता है।"

"बैडमिंटन इंच, सहज प्रवृत्ति और अविश्वसनीय अनुशासन का खेल है।"

"आप संयोग से मैच नहीं जीतते-आप उन्हें पसंद और प्रयास से जीतते हैं।"

"रैकेट के शटल को छूने से पहले ही फुटवर्क मैच जीत लेता है।"

"अपने पैरों पर हल्का और अपने दृढ़ संकल्प पर भारी रहें।"

"कोर्ट छोटा है, लेकिन लड़ाई बड़ी है।"

"अपनी सीमाएँ तोड़ें, न कि केवल शटल।"

"एक नौसिखिया की तरह प्रशिक्षण लें, एक चैंपियन की तरह खेलें।"

राजभाषा हिंदी और संविधानिक भाषाओं के साथ सामंजस्य

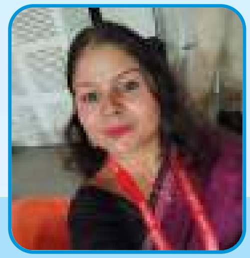

सुकिर्ति कुमारी
स. श्रे.-III (राजभाषा)

भारत विविधताओं का देश है, जहाँ अनेक भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक हैं। भारतीय संविधान ने इस विविधता को सम्मान देते हुए अनेक भाषाओं को मान्यता प्रदान की है। ऐसे में राजभाषा हिंदी का दायित्व और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि वह अन्य संविधानिक भाषाओं के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए प्रशासनिक कार्यों को प्रभावी बनाए।

राजभाषा हिंदी, एक संपर्क भाषा के रूप में, विभिन्न भाषायी पृष्ठभूमि वाले लोगों के बीच संवाद का सेतु बनती है। यह न केवल कार्यों को सरल और सुलभ बनाती है, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों के कर्मचारियों को एकजुट कर सहयोग की भावना को भी प्रबल करती है। हिंदी का उद्देश्य अन्य भाषाओं का स्थान लेना नहीं, बल्कि उनके साथ मिलकर कार्य की गति और गुणवत्ता को बढ़ाना है।

संविधान की अन्य भाषाओं के साथ हिंदी का सामंजस्य हमारे प्रशासनिक ढांचे को अधिक संवेदनशील और समावेशी बनाता है। जब किसी भी भाषा का सम्मान होता है, तो कार्यस्थल पर सकारात्मक वातावरण निर्मित होता है। इससे कर्मचारियों में आत्मविश्वास बढ़ता है और वे अपनी भाषा के साथ-साथ हिंदी में भी कार्य करने के लिए प्रेरित होते हैं।

कार्यालयों में अनुवाद, द्विभाषी कार्यप्रणाली और स्थानीय भाषाओं के सहयोग से हिंदी का प्रयोग एक संतुलित व्यवस्था का निर्माण करता है। यह व्यवस्था न केवल कार्यों की स्पष्टता सुनिश्चित करती है, बल्कि संदेशों को व्यापक स्तर पर समझने योग्य भी बनाती है।

डिजिटल युग में भी हिंदी और अन्य भाषाओं के बीच यह सामंजस्य और मजबूत हुआ है। विभिन्न सॉफ्टवेयर, यूनिकोड और अनुवाद उपकरणों के माध्यम से अब बहुभाषीय कार्य करना पहले से कहीं अधिक आसान हो गया है। इससे प्रशासनिक कार्यों में गति, पारदर्शिता और दक्षता आई है।

अंततः, राजभाषा हिंदी और संविधान की अन्य भाषाओं के बीच सामंजस्य ही हमारी वास्तविक शक्ति है। यह न केवल हमारे कार्यों को सजग और प्रभावी बनाता है, बल्कि "एकता में विविधता" की भावना को भी साकार करता है। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम सभी भाषाओं का सम्मान करते हुए हिंदी को एक सशक्त माध्यम के रूप में अपनाएँ।

"भाषाओं का सम्मान ही सशक्त राष्ट्र की पहचान है।"

छिपे हुए रत्नों का अनावरण: एलेप्पी के पर्यटन, संस्कृति और भविष्य की कहानी

वैशाक जे.
स.श्रे. III (तकनीकी)

एलेप्पी पर्यटन केरल की अर्थव्यवस्था का एक जीवंत और महत्वपूर्ण पहलू है, जो अपने सुरम्य बैकवाटर, समृद्ध संस्कृति और विविध अनुभवों के लिए जाना जाता है। यह निबंध एलेप्पी पर्यटन के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालता है, जिसमें इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, समकालीन महत्व, प्रभावशाली व्यक्तित्व और संभावित भविष्य के विकास शामिल हैं। इस विश्लेषण के माध्यम से, एलेप्पी को एक यात्रा गंतव्य के रूप में आकार देने वाले तत्वों की व्यापक समझ प्राप्त होती है। एलेप्पी के आकर्षण में योगदान देने वाले प्रमुख कारकों में से एक इसका सुरम्य परिदृश्य है, जो शांत बैकवाटर, हरे-भरे हरियाली और घुमावदार जलमार्गों की विशेषता है। आपस में जुड़ी नहरें और लैगून विभिन्न प्रकार की जल-आधारित गतिविधियों के अवसर प्रदान करते हैं, जैसे कि हाउसबोट क्रूज़, कयाकिंग और मछली पकड़ना। आगंतुक अक्सर पारंपरिक हाउसबोट में रहना पसंद करते हैं, जो स्थानीय संस्कृति और पर्यावरण का एक अनूठा अनुभव प्रदान करते हैं। यह मानसून के मौसम के दौरान विशेष रूप से सच है जब परिदृश्य खिलता है, क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता को प्रदर्शित करता है। अलेप्पी का एक समृद्ध ऐतिहासिक संदर्भ है जो इसके पर्यटन को और भी समृद्ध बनाता है। यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र रहा है, जो अपने मसाला व्यापार के लिए जाना जाता है। जलमार्गों के जटिल नेटवर्क के कारण इसे कभी 'पूर्व का वेटना' कहा जाता था। प्राचीन व्यापारियों द्वारा स्थापित व्यापार मार्गों ने अलेप्पी के आधुनिक पर्यटन उद्योग की नींव रखी। इन शुरुआती व्यावसायिक संबंधों की विरासत आज भी स्थानीय आबादी

की वास्तुकला और सांस्कृतिक प्रथाओं में दिखाई देती है। हाल के वर्षों में, केरल सरकार ने विकास के साधन के रूप में पर्यटन की क्षमता को पहचाना है। स्थायी पर्यटन प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न पहलों को लागू किया गया है। उदाहरण के लिए, इको-टूरिज्म कार्यक्रमों ने अवकाश यात्रा को प्रोत्साहित किया है जहाँ आगंतुक पर्यावरण को संरक्षित करते हुए स्थानीय समुदायों से जुड़ सकते हैं। इन कार्यक्रमों ने आर्थिक विकास को पर्यावरण संरक्षण के साथ संतुलित करने के महत्व पर प्रकाश डाला है। अलेप्पी पर्यटन को आकार देने में प्रभावशाली व्यक्तियों और संगठनों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उदाहरण के लिए, स्थानीय उद्यमियों ने बुनियादी ढाँचे में निवेश किया है, जिससे पर्यटकों के अनुभव को बढ़ाने वाली आधुनिक सुविधाएँ बनाई गई हैं। इसके अतिरिक्त, केरल पर्यटन विकास निगम की भागीदारी इस क्षेत्र को

को एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में विपणन करने में सहायक रही है। ट्रैवल एजेंसियों के साथ सहयोग ने डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर एलेप्पी की उपस्थिति को और बढ़ाया है, जिससे यह दुनिया भर के संभावित पर्यटकों के लिए सुलभ हो गया है। एलेप्पी के सांस्कृतिक उत्सव भी इसके पर्यटन आकर्षण में योगदान करते हैं। नेहरू ट्रॉफी बोट रेस जैसे कार्यक्रम भारत के विभिन्न हिस्सों और उससे आगे के क्षेत्रों से आगंतुकों को आकर्षित करते हैं। यह रेस स्थानीय लोगों की पारंपरिक नाव-निर्माण शिल्प कौशल और प्रतिस्पर्धी भावना को प्रदर्शित करती है। सांस्कृतिक कार्यक्रम न केवल मनोरंजन प्रदान करते हैं बल्कि आगंतुकों के बीच क्षेत्र की विरासत की समझ को भी बढ़ाते हैं। ये कार्यक्रम पर्यटकों को स्थानीय समुदाय से जुड़ने का अवसर भी प्रदान करते हैं, जिससे उनका समग्र अनुभव बेहतर होता है। एलेप्पी में पर्यटन की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करते समय, COVID-19 महामारी के प्रभाव पर विचार करना महत्वपूर्ण है। प्रकोप के कारण शुरू में पर्यटकों की संख्या में उल्लेखनीय गिरावट आई थी। हालाँकि, जैसे-जैसे यात्रा प्रतिबंध कम हुए, स्थानीय पर्यटन में रुचि धीरे-धीरे फिर से बढ़ने लगी। कई पर्यटक अब ऐसे गंतव्यों को पसंद कर रहे हैं जो विश्राम और प्रकृति का मिश्रण प्रदान करते हैं, जो महामारी के बाद के पर्यटन परिदृश्य में एलेप्पी को अनुकूल स्थान देता है। स्वास्थ्य पर्यटन के बारे में बढ़ती जागरूकता ने भी एलेप्पी में पर्यटन की गतिशीलता को प्रभावित किया है।

जिले में कई चिकित्सीय केंद्र हैं जो समग्र उपचार प्रदान करते हैं। कायाकल्प और स्वास्थ्य की तलाश करने वाले पर्यटक एलेप्पी को एक आकर्षक गंतव्य पाते हैं, जो पर्यटन क्षेत्र के विविधीकरण में योगदान देता है। यात्रा के अनुभव में स्वास्थ्य प्रथाओं का यह एकीकरण पर्यटकों के बीच स्वास्थ्य चेतना की ओर वैश्विक रुझानों के अनुरूप है।

एलेप्पी पर्यटन में भविष्य के विकास को कुछ चुनौतियों का समाधान करना होगा। पर्यटकों की आमद कभी-कभी पर्यावरणीय गिरावट का कारण बन सकती है। संधारणीय प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित करना महत्वपूर्ण

है जो बैकवाटर की जैव विविधता को संरक्षित करेंगे। इसके अतिरिक्त, स्थानीय हितधारकों को यह सुनिश्चित करने के लिए सहयोगात्मक रूप से काम करना चाहिए कि पर्यटन का लाभ स्वदेशी आबादी तक पहुँचे। यह स्थानीय शिल्प और उत्पादों को बढ़ावा देकर किया जा सकता है, इस प्रकार आगंतुकों के लिए एक प्रामाणिक अनुभव बना सकता है और अर्थव्यवस्था का समर्थन कर सकता है।

भविष्य को देखते हुए, तकनीकी प्रगति से एलेप्पी पर्यटन के विकास में एक आवश्यक भूमिका निभाने की उम्मीद है। आरक्षण, आभासी पर्यटन और उन्नत विपणन रणनीतियों के लिए डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म का उदय व्यापक दर्शकों को आकर्षित कर सकता है। इसके अलावा, सोशल मीडिया का लाभ उठाना एलेप्पी की अनूठी पेशकशों को बढ़ावा देने के लिए एक प्रभावी उपकरण के रूप में काम कर सकता है। प्रौद्योगिकी में उचित निवेश के साथ, पर्यटन क्षेत्र में सुधार हो सकता है।

कार्यालय में स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन और विजेता प्रतिभागिओं की कुछ झलकियाँ...

मंडल कार्यालय, कोयंबत्तूर द्वारा "सतर्कता हमारी साझा जिम्मेदारी" की कुछ झलकियाँ....

मंडल कार्यालय, कोयंबत्तूर द्वारा भारतीय खाद्य निगम की 62वीं स्थापना दिवस कुछ झलकियाँ....

मंडल कार्यालय, कोयंबत्तूर द्वारा क्रिसमस & नववर्ष कुछ झलकियाँ....

अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस की कुछ झलकियाँ....

मंडल कार्यालय, कोयंबत्तूर द्वारा एफ एस डी पिलामेड्डू में महाप्रबंधक महोदय द्वारा शिशुगृह और क्रिकेट नेट का उद्घाटन की कुछ झलकियाँ......

एक बहादुर आदमी

इस दुनिया में सभी लोग एक जैसे नहीं होते,
ज्यादातर लोग नाम और शोहरत के पीछे भागते हैं!

आज हर जगह पैसा हावी है,
इस कारण शब्द-बाँट का अंत हो गया!
आज, क्या कोई है जो आपकी बात सुनता है?
यदि ऐसा है तो, क्रिस्टल बहुत कम होंगे!

जब यह सारा संसार संकीर्ण और शुष्क है,
तब आकाश में टिमटिमाते तारों जैसे कुछ ही हैं!
थोडा सा भी दान करने से,
भूख से मर रही गेंद पर काबू पाया जा सकता है!

वे ही जीने का तरीका समझते हैं,
इस आत्मा और जीवन का मुख्य सिद्धांत देना है।
दिन में सपने देखने और पैसे की लालसा के बजाय,
वे खुद को संतुलित रखते हैं और यात्रा में व्यस्त रहते हैं!

अपने लिए काम करना हमारी क्रूरता है,
लेकिन दूसरों के लिए काम करना सभी खुशियों से परे है!
जो व्यक्ति इस काम को सकारात्मक इरादे से करेगा,
वह सबसे बहादुर व्यक्ति होगा और उसका तनाव भी कम होगा!

अश्विनि एन
(पुत्रि - श्री सतीश चंद्रकुमार बी)
स.श्रे. III (सामान्य)

मेरी ताकत

जेस्टीन राज
स.श्रे. III (लेखा)

मेरी ताकत मेरी पहचान,
मेहनत से मिलता मुझे सम्मान।
मुश्किल आए चाहे राहों में,
हिम्मत रखूँ हर एक चाहों में।
ठोकर खाकर फिर उठ जाता,
अपने सपनों को अपनाता।
आत्मविश्वास है मेरा साथी,
यही बनाता राह सुहाती।
ना डरता मैं अंधियारे से,
ना झुकता मैं सितारों से,
मेहनत ही मेरा है हथियार,
इसी से जीतूँ हर एक हार।
सच्चाई मेरी सबसे बड़ी ढाल,
ईमानदारी मेरा है कमाल।
मेरी ताकत मेरे विचार,
ले जाएँ मुझको आगे हर बार।
मैं खुद पर विश्वास रखता हूँ,
हर पल आगे बढ़ता हूँ।
मेरी ताकत मेरा हौसला,
यही है जीवन का असली उजाला।

"पिता का साया"

एलनजॉय
स.श्रे. III (तकनीकी)

पिता का साया होता है सबसे प्यारा,
उनकी मुस्कान में छिपा हर ख्वाब हमारा।
संग उनके हर रास्ता आसान लगता है,
उनकी आशीर्वाद से हर दिन नया सा लगता है।
उनकी मेहनत से घर में रौशनी है,
हमारे सपनों में हमेशा उनकी धड़कन बसी है
कभी जो हम गिरते हैं, वो हमें थामते हैं,
पिता के कदमों में जन्नत के निशान होते हैं।
सपनों को पूरा करने का जो जुनून होता है,
वो पिता ही होते हैं, जिनमें हर कमी छुपा होता है।
ग़मों में भी वो हमें हंसाते हैं,
कभी चुपके से आँसू पोंछ जाते हैं।
हर कठिनाई में उनका साहस झलकता है,
उनका प्यार हर दर्द को सुलझाता है।
पिता का प्यार अनमोल होता है,
उनकी छांव में ही संसार सोता है।

बेरोजगारी का दर्द"

बालाजी के वी
प्रबंधक (लेखा)

सपनों से भरा था दिल, जो कभी खुशियों से चमका,
आज बेरोजगारी के अंधेरे में हर ख्वाब धुंधला सा थका।
शिक्षा की डिग्री हाथ में, उम्मीदों का साथ था,
लेकिन हर दरवाज़ा बंद मिला, हर रास्ता खाली था।
ख़ाली हाथों में बसी हैं, सिर्फ तकलीफें और सवाल,
क्या गलती मेरी थी, या ये वक्त का था हाल।
दिन रात की मेहनत, अब बन गई सिर्फ एक कहानी,
किससे कहूँ अपनी पीड़ा, हर रास्ता लगता है सूनी।
आसपास सभी चेहरे, मेहनत से चल रहे हैं,
लेकिन कहीं ना कहीं हम सभी वहीं खड़े हैं
सपने थे बड़े, मगर हाथों में बेरोज़गारी की छाया,
जीने की ताब, कहीं खो सी गई, हौसला थम सा गया।
क्या है इसका हल, क्या है इसका जवाब,
जब कोई न समझे, तब खुद से ही पूछें ख्वाब।
कभी ना हारें, कभी न रुकें हम,
एक न एक दिन मिलेगा हमें रास्ता सही, यही है मेरा प्रण।

व्यक्तित्व का मार्ग

एन आर हरि प्रसाद
सुपुत्र- एम नागराजन
स. श्रेणी-॥ (लेखा)

एक समय की बात है, भेड़ों का एक बड़ा झुंड था। वे रोज़ अपने चरवाहे के साथ एक ही सीधे रास्ते पर चलते थे। उस झुंड की 99 भेड़ें हमेशा एक-दूसरे के पीछे-पीछे चलती थीं। उन्हें लगता था कि यही रास्ता सबसे सुरक्षित है। लेकिन धीरे-धीरे उस रास्ते की सारी घास खत्म हो गई। अब वहाँ खाने के लिए कुछ भी नहीं बचा था। फिर भी कोई भेड़ उस रास्ते को छोड़ने की हिम्मत नहीं कर रही थी। उसी झुंड में एक छोटी-सी भेड़ थी, जो बाकी सबसे थोड़ी अलग सोचती थी। उसने सोचा, "अगर मैं नया रास्ता चुनूँ, तो शायद मुझे कहीं अच्छी घास मिल जाए!"

यह सोचकर वह झुंड से अलग हो गई और एक ऊँची, ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी की ओर चल पड़ी। बाकी भेड़ें उसे देखकर हैरान हो गईं। कुछ ने उसे रोकने की कोशिश की, और कुछ उसे तरस भरी नज़रों से देखने लगीं। रास्ता मुश्किल था, लेकिन वह भेड़ बहादुर थी। वह धीरे-धीरे चढ़ती रही और आखिरकार पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गई। चोटी पर पहुँचकर वह खुशी से उछल पड़ी! वहाँ चारों तरफ हरी-भरी घास थी, जिसे किसी ने पहले कभी नहीं खाया था। पास ही एक साफ और मीठा पानी बहने वाली धारा भी थी। अब वह भेड़ खुशी-खुशी वहाँ रहने लगी। और बाकी 99 भेड़ें? वे उसी पुराने रास्ते पर चलती रहीं और साधारण जीवन जीती रहीं।

कोई युद्ध नहीं

एन आर हर्षित
सुपुत्र- एम नागराजन
स. श्रेणी-॥ (लेखा)

एक जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। जंगल में दो समूह थे। एक तरफ बंदर और हिरण रहते थे, और दूसरी तरफ हाथी और भालू रहते थे। सभी अपने-अपने तरीके से खुश थे। एक दिन गर्मी बहुत बढ़ गई। सभी जानवर पानी पीने के लिए एक तालाब के पास आए। लेकिन तभी झगड़ा शुरू हो गया।

बंदर बोले, "यह तालाब हमारा है!" - हाथी बोले, "नहीं, यह हमारा है!" - धीरे-धीरे सब जानवर चिल्लाने लगे, "हम लड़ेंगे! हम लड़ेंगे!"

तभी एक छोटा सा खरगोश वहाँ आया। वह बहुत शांत था। उसने धीरे से कहा, "कृपया लड़ो मत! अगर हम लड़ेंगे, तो सबको चोट लगेगी। हम पानी आपस में बाँट सकते हैं और मिलकर रह सकते हैं।"

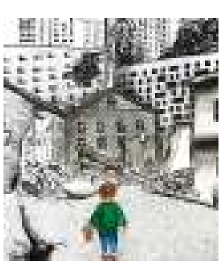

सभी जानवर कुछ देर के लिए चुप हो गए। उन्होंने सोचा कि खरगोश सही कह रहा है। फिर सबने मिलकर बात की और फैसला किया कि वे तालाब का पानी बराबर-बराबर बाँटेंगे। अब सब जानवर फिर से खुश हो गए। वे साथ खेलने लगे और शांति से रहने लगे।

सीख: लड़ाई से हमेशा नुकसान होता है, लेकिन प्यार और शांति से सब खुश रहते हैं। और सोचो, अगर जानवर बिना लड़ाई के शांति से रह सकते हैं, तो हम इंसान क्यों नहीं?

लेखा अनुभाग: अनुशासन की आधारशिला

एस श्रीनिवास राव
प्रबंधक (लेखा)

संख्याओं की दुनिया में बसता एक संसार,
जहाँ हर अंक कहता है, मेहनत का व्यवहार।

डेबिट-क्रेडिट की धुन में दिन बीत जाता,
हर हिसाब में सच्चाई का दीप जगमगाता।

कागज़ों के ढेर में छिपे होते हैं राज,
लेखा अनुभाग करता सबका सही अंदाज़।

न लाभ की चिंता, न हानि का शोर,
संतुलन बनाए रखना ही इसका है जोर।

हर पाई का हिसाब, हर खर्च का प्रमाण,
ईमानदारी से लिखता, संस्थान की पहचान।

चुपचाप कर्म करे, ना चाहे कोई मान,
लेखा अनुभाग ही है व्यवस्था की जान।

जहाँ अनुशासन और सत्य का हो संग,
वहीं खिलता है लेखा, बनकर सफलता का रंग।

मुझे FCI का कर्मचारी होने पर गर्व है, क्योंकि मैं इसकी अहमियत जानता हूँ।

एम. नागराजन
ए जी II (लेखा)
भारतीय खाद्य निगम कोयंबत्तूर

नदी के किनारे से गुज़रते हुए एक राहगीर की नज़र उस पर पड़ी। यह न जानते हुए कि वह एक हीरा है, वह उसे बाज़ार ले गया; उसे इस बात पर भी शक था कि क्या उसकी कोई कीमत भी मिलेगी। एक व्यापारी ने उसके हाथ में वह हीरा देखा और उसे बीस रुपए में बेचने को कहा। लेकिन उस राहगीर ने, यह सोचकर कि वह मोल-भाव करेगा, पच्चीस रुपए माँगे। व्यापारी, जो पाँच रुपए से ज़्यादा नहीं देना चाहता था, बीस रुपए पर मोल-भाव करने लगा। एक दूसरे व्यापारी ने यह देखा और उस हीरे को 25 रुपये में खरीद लिया। गुस्से में आकर उस व्यापारी ने राहगीर को डांटा और कहा, "अरे मूर्ख! इसकी कीमत हज़ारों में है... तुमने बिना जाने ही इसे बेच दिया!" उसने जवाब दिया, "उस पत्थर के लिए मेरी नज़र में तो यही कीमत थी। लेकिन यह एक हीरा है, और सबसे बड़े मूर्ख तो तुम हो, जिसने इसकी असली कीमत जानने के बाद भी इसे गंवा दिया।" कुछ लोग अपनी चीज़ों की असली कीमत जानने के बाद भी उन्हें छोड़ देते हैं, और इसी वजह से उन्हें नुकसान उठाना पड़ता है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की कुछ झलकियाँ....

'एक पेड़ मां के नाम'..... अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा वृक्षारोपण....

खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग के मंत्री महोदय द्वारा निरीक्षण की कुछ झलकियां..

स्वतंत्रता दिवस की कुछ झलकियां....

राजभाषा अनुभाग द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के विकास हेतु अनुभागों का निरीक्षण की कुछ झलकियां

पोंगल उत्सव और खेल महोत्सव की कुछ झलकियां...

FOOD CORPORATION OF INDIA

ओणम उत्सव की कुछ झलकियां....

वित्तीय वर्ष (2024-25) में 10,000 से अधिक शब्दों की हिंदी नॉटिंग एवं ड्राफ्टिंग में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले कर्मचारी...

प्रथम पुरस्कार

शरण्या एस
स.श्रे. II (सामान्य)

सबरी डी
स.श्रे. II (तकनीकी)

द्वितीय पुरस्कार

एस जनकर
स.श्रे. III (अगार)

सौम्या रसिका एस एस
स.श्रे. III (सामान्य)

कन्नन पी
स.श्रे. III (अगार)

तृतीय पुरस्कार

अखिलेश्वरण के
स.श्रे. III (अगार)

एलन जॉय
स.श्रे. III (तकनीकी)

वैशाक जे.
स.श्रे. III (तकनीकी)

प्रत्ति मोनिका
प्रबंधक(गु.नि.)

गोआर्बाचेव के
स.श्रे. III (सामान्य)

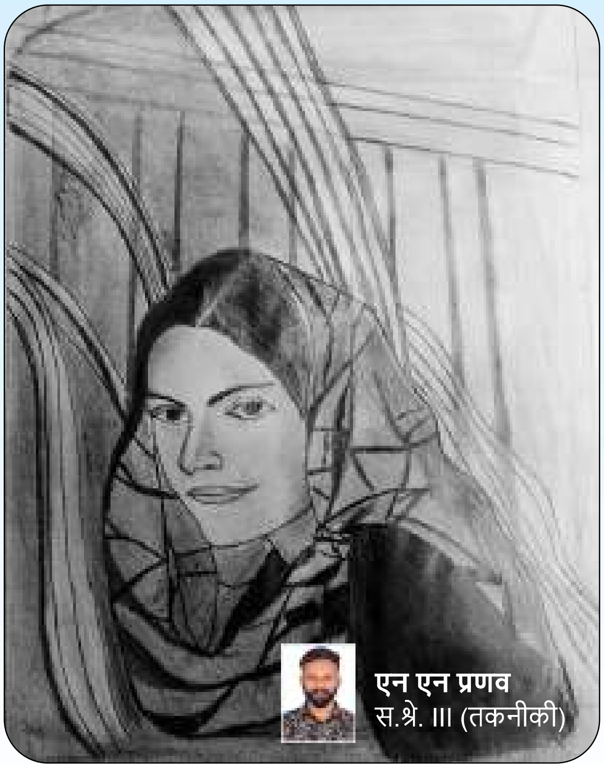

एन एन प्रणव
स.श्रे. III (तकनीकी)

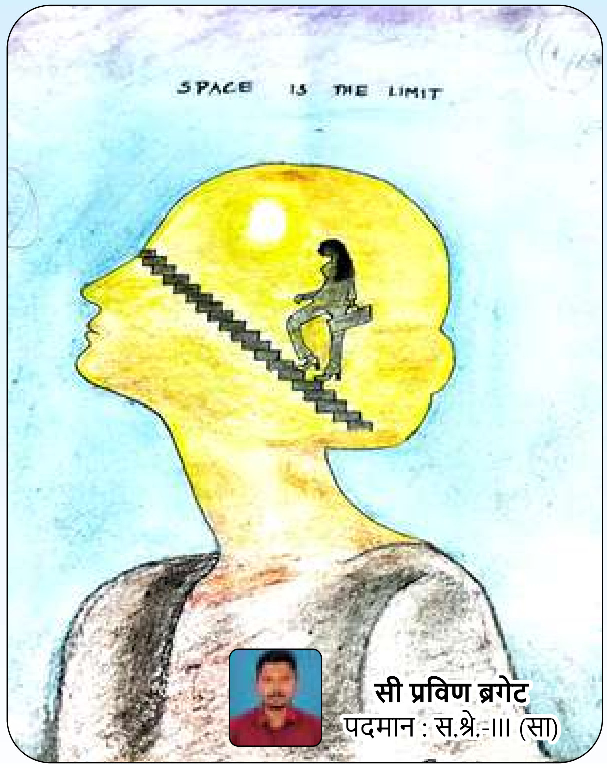

सी प्रविण ब्रगेट
पदमान : स.श्रे.-III (सा)

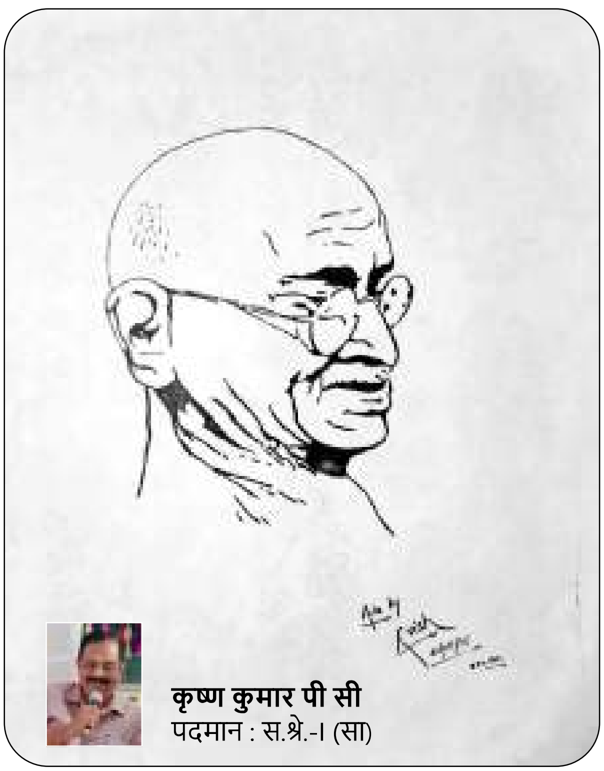

कृष्ण कुमार पी सी
पदमान : स.श्रे.-I (सा)

ए वाहिद
सुपुत्र- ए खाजामोइदीन
स. श्रे.-III (डिपो)

दक्षिण भारत का हिंदी दैनिक
दक्षिण भारत राष्ट्रमत

epaper.dakshinbharat.com
21 Sep 2025 - Page 8

हिन्दी पखवाड़ा

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

कोयम्बटूर। भारतीय खाद्य निगम के आंचलिक कार्यालय, दक्षिण एवं क्षेत्रीय कार्यालय तमिलनाडु के सौजन्य से मंडल कार्यालय कोयम्बटूर में 19 सितम्बर को हिन्दी दिवस और हिन्दी पखवाड़ा का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन सत्र में सुश्री सुकीर्ति कुमारी ने उद्घाटन करते हुए कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है और इसे राष्ट्रभाषा बनाने के लिए हम पूरे प्रयास में है। उन्होंने सभी कार्मिकों को यह प्रण दिलाया कि हम अपने कार्यालय संबंधी कार्यों शत प्रतिशत हिंदी में करने का प्रयास कर रहे हैं। अमृता पी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। पहले दिन हिंदी हस्तलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में कार्यालय के प्रायः सभी अधिकारी/कर्मचारियों ने उत्साह के साथ प्रतिभागिता किया। संचालन राजभाषा अधिकारी सुकीर्ति ने किया।

अंतर-विभागीय क्रिकेट टूर्नामेंट में उपविजेता का गौरव क्षण...

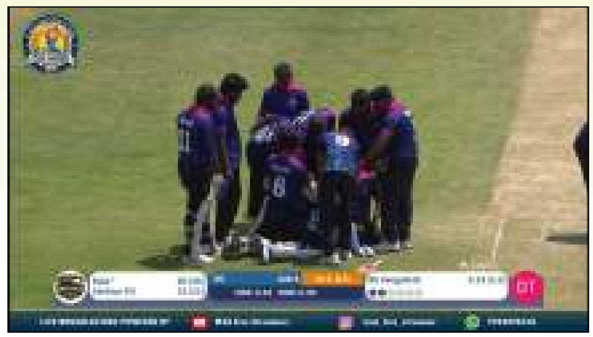

1 से 5 अगस्त, 2025 तक सलेम में आयोजित अखिल भारतीय अंतर क्षेत्रीय क्रिकेट टूर्नामेंट की कुछ शानदार और रोमांचक झलकियाँ

1 से 5 अगस्त, 2025 तक सलेम में आयोजित अखिल भारतीय अंतर क्षेत्रीय क्रिकेट टूर्नामेंट की कुछ शानदार और रोमांचक झलकियाँ...

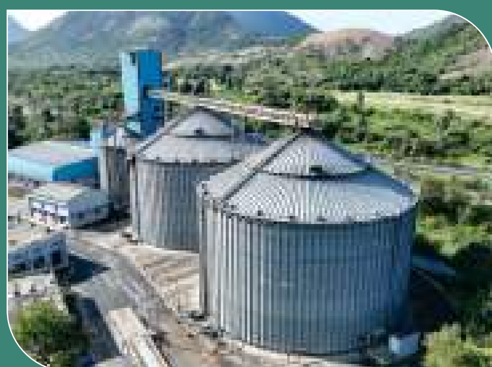

भारतीय खाद्य निगम, मण्डल कार्यालय, कोयम्बत्तूर
सं. 264, डॉ. राजेंद्र प्रसाद रोड, टाटाबाद, कोयम्बत्तूर-641012
फ़ोन: 0422-2492925 / ईमेल: coimbatn.fci@gov.in